

वैदेहि

मैथिलीक सर्वोत्तम मासिक



VAIDEHI
. 25 nP.

एक प्रति
चारि
आना

सितम्बर १९५८
२५ नवका पैसा

इन्द्रकान्तमिश्र (कुमार)

क
स्मृतिमे

जन्म

२३-७-१९५३ : अस्पतालमध्य

समय

रात्रि २ बाजि २० मिनट

निधन

१७-८-१९५८ : अस्पतालमध्य

समय

रात्रि २ बाजि २० मिनट

निधनसँ दू मिनट पूर्वक अन्तिम स्मृति-चिन्ह : अश्रुकण...!!

संस्थापकक प्रेरणा : इन्द्रकान्तमिश्र (कुमार)

[बिहार सरकार द्वारा स्कूल, कालेज एवं पुस्तकालयक हेतु स्वीकृत]

सम्पादक

प्रो० श्रीसुरेन्द्रभा
'सुमन'श्रीसुधांशु 'शेखर'
चौधरीप्रो० श्रीकृष्णकान्त
मिश्र

एक प्रति २५

विशेषांक ५०

वार्षिक ३)

आजीवन ५१)

संरक्षक १२५)

श्रीकृष्णकान्तमिश्र

द्वारा दरभंगा प्रेस

कम्पनी (प्रा०) लि.

दरभंगामे मुद्रित

एवं प्रकाशित

प्राप्ति-स्थान

वैदेही समिति,

लालबाग, दरभंगा

कथा-पिहानो

प्रकृतिक खेलओना
गंगा संतुष्ट छलीह
उपराग

श्रीभवनाथभा ३३२

श्रीजयानन्द ३२५

श्रीशिशिरकुमार ३२८

यात्रा

गुल्लिक यात्रा

श्रीश्यामानन्द ३३७

लेख

मिथिलाक लोक-नृत्य

श्रीप्रफुल्लकुमारसिंह 'मौन'

एवं श्रीभुवनेश्वर चौधरी ३४६

मुख-चित्र : वैदेही समिति, दरभंगाक संस्थापक-मंत्री श्रीकृष्णकान्त मिश्रक ज्येष्ठ बालकक आकस्मिक निधन गत १७-८-५८ केँ भै गेलन्हि । 'वैदेही' संस्थाक संस्थापना-कार्यक मूल-प्रेरणामे गैह भविष्य एकमात्र बालक छलखिन्ह । छौ मासाभ्यन्तरमे एहन दुःखद घटनाक पुनरावृत्ति मंत्री महोदयक परिवारमे द्वितीय थिक । एहिसँ पूर्व हिनक कन्या सुकन्या देवी १५-२-५८ प्रयागमे शान्त भै गेल छलखिन्ह । परमात्मा दिवंगत आत्माकेँ एवं हुनक समस्त शोक-सतप्त परिवारकेँ एहि बृहत् विपत्तिकेँ सहन करबाक शक्ति प्रदान करथुन्ह ।

श्रीजयानन्द

गंगा आव सतुष्ट छलीह.....

गंगा तएँ आव सुखा गेलीह अछि । ओ उमंग, ओ गति आ ओ प्रवाह सभ विलीन भए गेल छइन्ह । यौवनक प्रखर उन्मत्त प्रवाह जेना वएसक अजस बालुक ढेरमे पड़ि गेल हो । चंचलता, गाम्भीर्य, रूप, मस्ती सभ समाप्त—सभक स्थान रहि गेल छइक वस रजतपिण्ड मात्रे—उन्नत, विशाल, असुन्दर । आओर एम्हर कलोजिया छौंड़ा सभक सपरतीव व्यवहार ! जाइत जाइये छुट्टोक दिन कए मौज कर लेल गंगाक ओहि अवरुद्ध प्रवाह केर विकट रूप, असुन्दर, उन्नत आ विशाल रजत-पिण्ड—दियर पर ।

एहि बेर तिला-संक्रान्ति दिन सभक विचार भेलइक गंगा-स्नानक । दस-वारह संगी केर जत्था विदा भए गेलइ तिला-संक्रान्ति मनावए दियर पर । चूड़ा-दही, गीत-कविता, तास-कबड्डी—सभक आयोजन रहइ ह । केओ नाहक वल्ला धए कए भसिआएल जाइत छल नाहक संग, केओ नाह पर तास खेलाइत जाइत छल. आ उत्साही हेलितहिं जाइत छल—स्वतंत्र ! गंगाक शांत धारमे ।

रमेश नाह पर वइसल छल । मन होइ नाह परसँ कूदि कए हेल लागए गंगामे । मुदा को करितए, पैनामा छलइक पहिरनामे । कहने छलइक वैजुआकेँ 'धोती हमर नेने अविहें, हम सेक्रेटेरियट भोरे जाएब आ ओम्हरेसँ घाट पर चल आएब ।' मुदा वैजुआ धोतिए बिसरि गेलइक । अनकर वकर धोती पहिरते, कतहु केयो कहि देतइक—की औ सभ चीजमे ओपिये ब्राण्ड (Other person Brand ।')

वरनी कोनहुना संवरण कएने वइसल छल नाहपर चुप-चाप ! हेलनिहार सभक कला-प्रदर्शन देखइत—खनोकेँ कनिचे मुस्काइत खनोकेँ निसास छोड़इत ।

नाह आवि कए लगलइक दियर पर, हेलनिहार सभ अबइत गेलाह एका-एकी । भोजन भेलइक, खेलकूद भेलइक साहित्य-चर्चा भेलइक आ जत्था फेर आपसोक लेल तत्पर भेल । किछु हेलनिहारो नाहपर चढ़ि गेलाह मुदा किछु केर भेलइक जे एम्हरोसँ हेलिए कए जाइ—सुखाएल गंगामे हेलबे

कोना ? न माटि न रेत; सोमे हाथ मारने जाउ निकलल जाउ । हेलबिहार सभक एहेन उत्साह देखि रमेशोक इच्छा जोर पकड़ि लेलकइन्ह । पैजामा कए डराँडोरिमे खोंसइत वजलाह—देखू हम तैयार छी । चलइत चल आव देखू के कतेक हेलइत छी !

जै गंगा ! —कहि शीघ्रतासँ कूदल गंगामे । हेलितो छइक वेस, सभक दू हाथ से एकर एके हाथ ।

उपर मेघ लागल छलइक । पुरवा जे बहलइक तए गोटेक-आधेक बुन्नो पड़ए लगलइक । मेघक प्रतिबिम्बसँ गंगा स्याह भए गेल छलोह । नाहपर बभरिया—दछिनवरिया डाँड़ चलबए वलामे जिहम-जिदा भए गेल रहइक—के ककरा दिस मोड़े, नाहक माँगि ।

नाह भागल जाइत छलइत कोना-कोनी, बरु भट्टे कहक चाही ।

रमेश आधा धारमे पहुँचल तए देखलकइक जे ओ बड़ आगाँ बढ़ि गेल अछि । वसातमे संगी सभ कए लेबाक चाही । कतहु केओ थाकिए जाए । धीरे-धीरे हेलइत घूमि कए तकलकइक तए देखलकइक जे ओ सभ बड़ पछुआ गेल छलइक । धीरे-धीरे हेलइत नाह कए देखलकइल त नाह बड़ दूर चल गेल रहइक । मुदा बरनी एतबा दूर धरि हम एक गोटे कए लइयो कए हेलि सकइत छी—सोचि कए धीरे-धीरे हेलिते रहल । कोम्हर चल गेल ई सभ ? अरे हम एतेक...भासि...गेलहुँ ? ओ सभ तए सिरमथुए हेल गेल । ओह ! पुरवामे कनेक पच्छिमे मुहे हेलब नीक । कोन ठेकान, चिरकुटसँ गोटेक बेर नाकमे पानि चल जाए ।

एही तरहँ कखनहुँ विरेशकेँ थाकि जएबाक आशंकासँ कतए कखनहुँ पुरवाक कारणे रमेश सिरमथुए हेल लागल । वायु किछु तेज भेल जाइत, कल-कलक मधुर शब्द केर स्थान पर विचित्र सन्-सन्, छप्-छप् होमए लागल रहइक । श्याम वर्ण गंगा आर श्याम वर्ण मेघ, बीचमे बालुक उज्जर दप-दप कण जेना रहि कए केओ फटकि दइत रहइक ।

रमेशक आँखि भए गेल रहइक । थाकल विरेश कए मनु आ कलित उत्साहित कए रहल छलइक कोतसँ—वाह विरेश ! वाह चारि हाथ आओर । हँ...हँ आवि गेलहुँ थाहमे ।

रमेश सोचर लागल—अए ? तए विरेश थाकि कए डुबि जाइते ? अएलहुँ छल बारह संगी जइतहुँ एगारह ? हे भगवान् !.....जै माँ गंगा !.....बरनो आव तए ओ उपर भए गेल अछि । चली आव हमहुँ, सभ तए उपर भइये गेल । छप्-छप्, हर-हर करइत गंगामे रमेशक हाथ भाव-भाव पड़ए लगलइन्हशान्त गंगा, धीर प्रवाह किंतु सर्वत्र अशान्त शब्द.....

हड़-हड़, छप्-छप् । की... 'वाँहि चढ़ि गेल ?' शंका भेलइक रमेश कए स्मरण भए अएलइक..... 'नाह' ? ओह नाह तए ओतए..... बड़ी दूर जा कए लागल छइक । मुदा थाकब की ? भेल ओम्हरसँ एनाइ..... नाह कतहु रहए कएटा नाह छैरु..... एह नहिने रहतइक एको टा तए की ? मुदा गुमान नहि करएक चाही..... जै माँ गंगा !... एह... बड़ थाकि गेलहुँ । एतवो दुर नाहो पर चल जइतहुँ । थाहिअइक ? ऐ ? थाकलमे आव दम आओत ? मुदा आव तए थाहे हेतइक ।

मनु, कलित आ वोरेल देखलकइक जे रमेश डूबलइक अछि । दउड़लइक मुदा तखनहि रमेशक फक् दए जागल । हऽ ! हऽ ! डुब्बो लगओत छल । निसास छोड़ैत बाजल मनू ।

मुदा रमेशक पैरमे ? पैर की भए गेलैक अछि ? ओह पैजामा खुजि गेलइक अछि । हे माँ गंगा !... पैर तए उठितहि नाह छइक । तोनूकेँ साम्नामे देखि रमेश हाथ उठेलइक । तीनू चिकरए लागल—रो दौड़ ! बचाउ ! रे नाह रमेश देखलइक बड़ी दूर परसँ एक टा नाह छुटलइक वड़ तेज भसानो । मुदा छलइके वड़ दूरपर । नाहे कए देखइत रमेश कए बुझि पड़लइक जेना ओकर वाँहि बालुमे पइस गेल होइक । नाह दृष्टिसँ नुका गेलइक—चल जाइत रहलइक पानिक तर.....

...घाट परसँ सुनलकइक नव व्याहुत पत्नीक चीत्कार पातर चन्-चन् आवाज थर-थराइत । फक दए जागल रमेश—ओह चारि हाथ आओर..... हे माँ गंगा... त्राहि !... नाह ! फेर क्षण भरिलेल चल गेलइक तऽर जइतहिँ चिकर-लइक... 'मा... ए' आत्माक चीत्कार असमर्थताक पश्चातापक चीत्कार स्नेह आओर अपन निरर्थताक चीत्कार...

तखनहि सुखाएल गंगा कए जीवनक अकर्मण्यता समाजक उपेक्षा आ जीवनक निराशा हड़-हड़ा देलकैक । हवाक बिड़रोस गंगा सिहरि उठलोह । रमेश पानि कए पकड़ि कए ठाढ़ होमए लागल मुदा बुझि पड़लइक जेना तूरसँ भरल गद्दा बला पलंग पर निन्नसँ मातल जाइत हो ।.....

...रमेश डूबि गेल !

गंगा खलबल कए शान्त भए गेलीह । नाह सभ अहांछिया कटइत छल, घाट पर जनसमूह जमा भए रहल छलइक कोलाहल भए रहल छलइक, मुदा गंगा आव शांत छलीह..... सम्भव संतुष्ट !

उपराग

श्रीशिशिरकुमार

उड़ मैनाजी लेलकौक देना—चिकरि उठलीह सविता ।

हँ, त जानि लिअ दाइ क्यो काज नहि देत—पट द उत्तर दै शेखर अपन काजमे व्यस्त भै गेल ।

एह जेना हमरा सभकेँ गामसँ भगा देथिन्ह, चलू-चलू देखलौ अहाँक ललकार ।—व्यंग कै उठलीह साबो ।

वेश त हमर को लेब, एक बेर आरो उड़ा क देखिअौक । एक बेर छोड़ि देलौ, बेर - बेर की छोड़िए देब । कनिजे उड़ा कै देखिअौक ने ?

ई कहि दस वर्षक बालक शेखर लाल एवं आरो - रंगक टिकुलीक पाछाँ दौड़ लगलाह । किन्तु सवितो छलीह महाग जिहो । किएक छोड़तीह ओ अपन जिह । इहो बेचारी शेखरक पाछाँ - पाछाँ दौड़ लगलीह । टिकुली एकठामसँ उड़ैत-उड़ैत दोसर ठाम जाए केँ बैसे आ फेरि उड़ि जाय किएक ओ बैसि केँ प्राण देत ? किन्तु कथी लै छोड़तन्हि शेखर ।

एम्हर-ओम्हर उड़ैत-उड़ैत दू-चारि टिकुली लाल ककाक बाड़ोक बैइला टाट पर जा केँ बैसि रहल । लाल ककाक संगे आरो लोकनि सब हुनक चौखड़ा दलानमे फोंक कटै छल । रौद छल वड़ कड़गर । ई रौदमे के एहन हैत जे एम्हर-ओम्हर बौआइत ? ककरा विपत्ति पड़लैक अछि । किन्तु टिकुली की खेल काल । एहन कड़गर रौदमे ई दूनू बालक - बालिका नहि जानि कोन मोहमे पड़ि एम्हर - ओम्हर कै रहल अछि । बुझि पड़ै अछि जे टिकुली एहि नेदा लोकनिक मान माहि नेनै अछि । तँ ई लोकनि टिकुलीक पाछाँ दौड़ि रहल अछि । नहि त ईहो लोकनि ने जा केँ अपन-अपन घर मे इ कड़कड़ौआ रौदमे रहितै ? किन्तु ई अछि त ई लोकनि बेहाल रंग - विरंगा टिकुली पर ।

टिकुलीकेँ टाट पर बैसल देखि, शेखर पैर मारैत टिकुलीक समीप आयल । दुनु अगिला आँगुरकेँ फलका कै टिकुलीकेँ पकड़बाक हेतु प्रस्तुत होमय लागल । यावत शेखरक आँगुर टिकुलीक पाँखिकेँ धरत तावत चिकरि उठलीह सविता—उड़ मैनाजी लेलकौक देना ।

शेखर अवाके रहि गेल । सविताक मंत्रसँ उड़ि गेल टिकुली । बेचाराक अप्पन सन मुँह भै गेलैक । तमसा गेल । ओकर मुँह लाल भै गेलैक । भौं देह होमय लगलैक । ठोर अपने मोने फड़के लगलैक । आवेशमे आधि ओ दीड़ केँ एक हाथसँ सविताक भोंट पकड़ि लेलक आ दोसर हाथसँ सविताक कोमल गालपर प्रहार करै लागल । सवितो यथाशक्ति प्रत्युत्तर देमै लागलीह । फलस्वरूप दुहु गोटेमे गुथम - गुथ्या होमय लागल । ई लोकनि मारि-पिटक संगे-संग किलोल करै जाइ छलाह । एहि दुहु गोटेक किलोल सुनि दलान परक सुतल व्यक्तिक नींद टुटि गेलैन्हि । ओ जखन नेत्र फोललन्हि त कारण स्पष्ट देखमे अएलन्हि । एक गोटा जा के एहि लोकनिक भगड़ा छोड़ा देलकैन्हि । संगहि संग धोप - धोप सेहो केँ ओतैसँ पड़वाक हेतु कहि घुरि अएलाह ।

शेखर देह - हाथ झाड़ि अपन आँगन दिश विदा भेल । सड़क पर रुसला-पड़लाक कारणें शेखरक वस्त्र मे नीक जकाँ माटि - बालु लागल छल । कतहु माए देखि नै लैक एहि हेतु बड़े ससक्तता पूर्वक देह-हाथ झाड़ि आँगा बढे छल ।

सविताक वयस छल सात वर्षक । संगहि संग बेचारी स्त्री । पुरुष - जातिक बलक आगाँ स्त्री-जातिक कथा कोन । एहि हेतु बेचारी साबो केँ शेखर नीक जकाँ चूरने छलैन्ह ।

शेखर त अपन देहो-हाथ झाड़ि किष्का भऽ गेल, किन्तु ई बेचारी एम्हर-ओम्हर ताकि कनैत - कनैत अपन आँगन विदा भेलीह । आँगनक समीप अवैत आरो जोरसँ कानै लागल ।

आँगनमे केवल दादीक निग्र टुटि गेल रहैन्हि । माए एखनि धरि निद्रामे छलीह । दादीक दृष्टि जखन एक मात्र अपन नातिन पर पड़लन्हि त ओ बेचारी चट् दै पुछि बैसलीह—साबो ! की भेलौक अछि ? किएक कनै छह ? कतै सँ अवैत छह ?

दादीक सान्त्वनापूर्ण वचन सुनि साबोक आँखिमे नहि जानि कतैसँ नोर आरो आबि गेलैक आर जोरसँ कानै लागल ।

साबोक ई अवस्था देखि दौड़ि केँ आबि साबोकेँ कोरमे लै दुलारसँ दादी जिज्ञासा करै लगलीह । किन्तु दादीक बचन सुनि साबो आरो जोरसँ बुकारि पाड़ि कै कानै लगलीह ।

दादीकेँ जखन सभ बुझैमे अएलन्हि त ओ आवेशमे आबि गेलीह । साबोक डेन पकड़ि आ विदा भेलीह उपराग देबैक हेतु ।

शेखरक आँगनक ड्योढ़ीए परसँ दादी गरजि उठलीह—एह । बड़ सपरतीब, देखू नेनाकेँ अधमरू कै के छोड़ि देलक । ...क्यो बड़का अछि त अपना घर मे, जँ हम गरीबे छी त की मंगै अबै छिएक ?.....नहि जानि ई वृद्धा एके दममे कतेक बाजि गेलीह । बुझि पड़ै छल जेना चोट साबोकेँ नहि दिनके लागल होइन्ह ।

शेखर त ओतैसँ पड़ा अपन माएक लग कृत्रिम निद्राक मुद्रामे सुति रहल रहल छल । आ' हिनक माए त पहिनेसँ फोंफ कटै छलीह । बूढ़ीक बाजब सुनि शेखर साँस बड़ कम वेगसँ लेबै लागल ।

किन्तु बूढ़ीक गर्जना सुनि राजपुरवाली (शेखरक माए)क निन्द टुटि गेलन्हि । ओ बेचारो जखन आँगनक रंग देखलन्हि । त अवाक् भै गेलीह । संगहिसंग हुनक दृष्टि लगमे सुतल बालक शेखरक उपर सेहो गेलन्हि । हिनका बुझमे कोनो गप्प नहि अएलैन्हि । ई बेचारी त चुपे छलीह आ एम्हर दादी चटा-चट पटा • पट गारिक वर्षा करै छलीह ।

की भेलैन्हि अए काकी ? राजपुरवाली बजलीह । हैत की कपार, सेँ त लिअऽ अपन दुलारू बेटाकेँ । ई अपने पर छजतँ एकर एहन साहस जे हमर नेनाकेँ मारत ? अहू छौंड़ो के वेर - वेर मना केलिएक जे एहन अगिलगू, रजागह संग नहि खेलाबह त इहो अरवधिकेँ एकरे संग रड़धुम्मस करैछ । एक्के दममे सभटा वाजि गेलीह दादी ।

एह काकी नेना सभक गप्पक कोनो उपराग होइक । एखने फेरि दुहु गोटा एक्के ठाम खेलैत—उत्तर देलथिन्ह राजपुरवाली ।

दादी आ राजपुरवालीक बीचमे गप्प होइत छल आ' एम्हर शेखरक कोंढ़ काँपि रहल छल । एहन नै हो की माए तमसा कै अपराधक दण्ड देबा लै तैयार भै जाय । अस्तु, बेचारा नीक जकाँ देह हाथ सधने छल । जे माए

बुभुक्षि ई सुतल अछि नींद भविष्यक फल विचारि बेचारा सिहरि जाइत छल । कतहु बुढ़ियाक गेलाक अनन्तर माय कतहु एम्हरे ने...

हे, हम कहि दैत छी हमहुँ अपन नेनाकेँ एखनसँ बरजैत छी आ' अहूँ अपन वेटा के बरजि लिअ । जँ मानत नहि त हम नहि बुझब जे बड़ा-बड़आक वेटा अछि । कहै छैक तकर दनक परि । हबोडकार भै कानै छल हमर नेना... । —परतारणाक हेतु बजलीह बुढ़ि दादी ।

भेलैक त दादी ! छोट-छोट गप्पक कतहु एतोक घमरथनि हो । नेना सबदिक कथे कोन ? संगहि संग इहो त किछु उठा नहिये रखलन्हि अछि । —उत्तर देलखिन्ह राजपुरवाली ।

देखू ने हिनक चतुरपन । से की हम सब गाय-बाछी छी । जे किओ मारैत रहत आ' हम सभ किछु बजबो ने करी । उठा किएक ने राखब । ओ नीक जकाँ चुरि देलक नेनाकेँ आ' हम बजबो नहि करी । —गरजि उठलीह बूढ़ी ।

त वेश हिनको जखन अवसर लगन्हि छौंड़ाकेँ नीक जकाँ चुरि दिहथीन्ह । एहिसँ वेशी आर की करथीन्ह । भेलैन्हि ने हिनक मोन शान्त—लोहछि कै राजपुरवाली उत्तर देलथिन्ह ।

दादी सविताक हाथ पकड़ि अपन आँगन दिश विदा भेलीह । संगहि संग ओ अपन नातिनकेँ डँटै छलीह—आब जँ तों एहन नाढ़र संग खेलै जेबह त नोक जकाँ चुरि देबोक । बेर-बेर मना कैलोसँ तो एकरे संगै खेलै जाइत छह ।

एम्हर शेखरक माए उठा कै सभ बात शेखरसँ पुछि मना कै देलकन्हि जे आवसँ कोनो उपराग अतै त चुराइ लगतौक ।

डाक्टर विमानबिहारोमजुमदार

द्वारा

सम्पादित

विद्यापति

सुन्दर भूमिका सहित एवं अद्यावधि उपलब्ध समस्त पद सभक

एक ठाम संकलन : मूल्य १५ टाका मात्र ।

पृ० सं० ६०० ड० क्रा० ।

वितरक : मन्त्री, वैदेही समिति, दरभंगा

प्रकृतिक खेलशोना

रासायनिक पदार्थ विशेष सँ कोनो काठ घूनसँ बचाओलो जा सकैह; किन्तु यदि मानवक हृदय काठ भए जाए तँ विनाशकारी घूनसँ ओकर बाँचव सर्वथा असम्भव । मिथ्या अभिमान स्वाभिमानक, उच्छृंखलता स्पष्टवादिताक, एवं कटुता वैराग्यक रूप धारण कए अपन क्षणिक शक्तिसँ अपना कएँ वा शानान्ध मानव समाज कएँ भने परतारि लिअए; किन्तु ओहि प्रतारणक रूपान्तर स्वतः भविष्ये स्पष्ट कए दैछ ।

संयम सोमाक अतिक्रमण कए चुकल, विवेक मौन छल, उच्छृंखलता बाचाल । असूयाक 'अणुवम' सुदर्शनक तीव्रतासँ सुशीलक अन्तस्तल कएँ क्षत-विक्षत कए देलक । सुदर्शनक आमर्ष चक्र घूमि रहल छल—अत्यधिक तीक्ष्णतासँ एक-एक स्फुलिंग सहस्रो आत्मा कएँ निमिषमे कुण्ठित कए देनिहार । विवशता विवेक कएँ विवश कए अट्टाहास कए रहल छल । विवेकक दोष किछु नहि । यदि दोष कहल जाए तँ एतबेक कि विवेक कएँ नीक घरमे एक सुन्दरी आओर सुशिक्षिता कन्यासँ विवाह भेल छलैनहि; आओर ओ ओही वर्ष एम. ए.क परीक्षामे सर्वप्रथम भए एक कओलेजमे प्रोफेसर नियुक्त भेल छलाह ।

सुदर्शन सम्बन्धे पित्ती, किन्तु अवस्थामे छोट । ओ विवेकसँ पहिनहि गृहस्थ भए चुकल छलाह । एक बालकक पितो । अपने भुट्टे-नाटे, चपटल मुँह, थोभल नाक, जमुनियाँ रंग, पएरमे दर्जनो वेमाए फाटल, आओर आँखि लग कनेक कैंल, हुनक धर्मपत्नीक तँ कथे की ? प्रायः गामक तरुणसँ तरुण शूकरी वा वैशाखनन्दिनी दिनक रूपगुणक स्पर्धा कदाचिते कए सकैत छलथीन्ह । सुदर्शन अपन पारिवारिक जीवनसँ कतेक सन्तुष्ट रहथि से तँ नहि कहि, किन्तु स्त्रीक डरें वा पेटक प्रमादें वेचारे आषाढ़े जकाँ अगहनहुमे अधिक समय पहुनाइए करैत रहथि । जेहो दुइ-चारि विगहा पैरक खेत-

पथर रहैन्हि सेहो बटैदार सभक उत्सर्ग ले सन्गति बनि चुकल छलैक । सुदर्शन कएँ कोनो चिन्ते नहि; आओर विवेक पितृहीन हएवाक उपरान्त जे घरक आशा छोड़ि कलकत्ता भगलाह से फेर विना एम्. ए. कएने घरक सुई नहि देखलैन्हि । विवेक विवेके छलाह । हुनका आशा छलैन्हि जे सुदर्शन यद्यपि हमर पिताक वैमात्रेय भाय थिकाह; आओर पिताक देहान्तक बाद ओ हमरा तज्ज कए घरसँ भगबौक हेतु विवश कए देने छलाह; तथापि आव हम हुनका अपन कमाइ पर सुख-शान्तिसँ राखि सकैत छियेन्हि । ओही आशासँ बेचारे कलकत्तासँ गाम आएल छलाह जे घर-आडनक किछु व्यवस्था कए सुदर्शनहुँक जीवन कएँ सुखमय बनएवाक किछु समुचित प्रबन्ध कए दियेन्हि । किन्तु, आत्मर्ष...आत्मर्ष एहने विष थोक जे आनकालत कथे की ? अपनो स्वाथक हनन कए दैछ । विवेकसँ आव किछु लाभ भए सकैछ, तकरो प्रलोभन सुदर्शन कएँ शान्त नहि राखि सकलैन्हि । हमर वैमात्रेयक बालक कएँ एहन नीक नोकरी, एहन नीक घरमे विवाह; आओर एहन ठाठ-बाट, ई सुदर्शनक हृदय कएँ द्वेषानलसँ सहसा धधकाए देलक । संयम लङ्क लेलक । श्लीलता अभिशापक सज्ज शिष्टतापर अचानक आक्रमण कए देलक । अपशब्द, उपराग, आओर अभिशाप विवेक कएँ मानू संज्ञा-हीन जकाँ बनाए देलक द्वेषक द्वारासँ दुत्कारल स्नेह अपन नैराश्यपर चुपचाप तोर बहवैत चोटहि घूरि गेल । अपन घर, अपन परिवार, अपन गाम, एवं अपन समाज केओ विवेक कएँ कनेकोकाल विलमाए नहि सकल । तथा कल्पित स्वत्व कएँ पराजित मानि डरिबुक आत्मर्ष अपन कल्पित वीरतापर न कहि कतेक कालधरि ओ कतेक दिनधरि प्रभुत्व भाषणक सज्ज अट्टहास करैत रहि गेल ।

समय ससरि रहल छल । दिनपर मास, मास पर ऋतु, ऋतु पर वर्ष; कतेको वर्ष बीति गेल । काल अहङ्कार खाइछ; आओर अहङ्कार खाइछ स्वयं अहङ्कारी कएँ । रासायनिक पदार्थ विशेषसँ कोनो काठ घूनसँ बचाओलो जा सकैछ; किन्तु यदि मानवक हृदय काठ भए जाए तँ विनाशकारी घूनसँ ओकर बाँचव सर्वथा असम्भव । मिथ्या-अभिमान स्वाभिमानक, उच्छृंखलता स्पष्ट-

बादिताक, एवं कटुता वैराग्यकरूप धारण कए अपन क्षणिक शक्तिसँ अपना कएँ
वा ज्ञानान्ध मानव समाज कएँ भने परतारि लिअए; किन्तु ओहि प्रतापणाक
रूपान्तर स्वतः भविष्ये स्पष्ट कए दैछ । प्रकृतिक अभिशापमे सुदर्शन अपन
रास्ता स्वयं बना चुकल छलाह । ओहि पर हुनका स्वयं चलए पड़ितैन्हि;
ओ चलैत रहलाह । कर्तव्यहीनता परिवार कएँ नरक बनाए दैछ । कर्तव्यहीन
स्वामीक स्त्री, कर्तव्यहीन माता-पिताक सन्तान, कर्तव्यहीन पत्नीक स्वामी,
वा—एक शब्दमे कर्तव्यहीन नागरिकक समाज कहियो अपन नहि होइछ ।
सुदर्शन कएँ केओ अपन नहि रहलैन्हि । केवल आमर्षक कारणेँ जकरा-
तकरा, जतए-ततए काटिनेनिहार विषधरक केओ प्राणभीरु मानव-सिंह वा—
पोषक नहि भए सकैछ । दाँत तोड़ि नचौनिहार सपहरिया तँ अपवादे मानल
जा सकैछ; किन्तु सेहो अपन स्वार्थहि ।

ईह, मूढ़ा नहितन । पेट भेलैन बखारी, आ काज-उदम करैमे जेना लुट्ठी
लागल रहैन । हमरा जेना 'तोड़ा' देने होथि जे दिनका भात-दालि रान्हि-
रान्हि ठुसैलए दैत रहबैन । बेटा दुखीत छैनए एक घोंट औषधमे । हमरा
से देहमे ने वस्त्र ने पेटमे अन्न; आ—तखन ई छुलहा पेट पोसैलए गाम-
गाम कुकुर जकाँ सर-कुटुमक ओइठाँ हुलकैत फिरैए—।

सुदर्शन कएँ अपन धर्मपत्नीसँ एहि तरहक प्रवचन सुनबाक अभ्यास बहुत
दिनसँ बनल छलैन्हि; किन्तु टहल-बूलि कएँ पेट भरनिहार पुरुषकएँ कुल-
लक्ष्मीसँ एहितरहक अनुरोध किछु रोचके बुझना जाइछ; तथापि भूखल
पेटमे आलसीअहुक आमोद-प्रमोद विषाक्त भए जाइत छैक; आओर सङ्गहि
एहन कर्तव्य-परायण पतिदेवकएँ तेरहम विद्याक प्रयोगक निरन्तर आशङ्का
बनल रहैत छैन्हि । अतएव, आजुक रङ्ग विशेष बदरङ्ग देखि लत्तहि-पत्ताहि
आठनसँ ससरि गेलाह । ससरले रहि गेलाह; पुनः घुरि नहि अएलाह ।

पित्तीक गाम छोड़ि भगना; आओर पितियानिक दुःस्थितिक समाचार सुनि
विवेकक हृदय दयासँ द्रवीभूत भए गेलैन्ह अपन स्त्रीसँ परामर्श कए ओ
लगले गाम आवि अपन पितियानि ओ पितियौत कएँ सङ्गलए कलकत्ता
चल गेलाह । जाहि पितियानि कएँ फुदलो आँखिँ पढ़िने नहि सोहाइत

छेलथीन्ह, तनिका ओएह विवेक ! आओर हुनक अर्द्धांगिनी शोला जीवनक एकमात्र अवलम्ब बनि गेलथीन्ह । समय अपन प्रभाव देखओलक । विवेक अपन कर्तव्य - पालन पर गद्गद् छलाह । हुनक पितियानि अपन अतीत - व्यवहार पर लजित । किन्तु, शरणागतक पश्चात्तापे की ? एहि रूपक परिवर्तनक श्रेय समय एवं संयोगक होइछ । ओहि अप्रपाश - बद्ध मानवक नहिँ जे भविष्यहु कएँ वर्तमानक अनुचर मानि स्वयं दानव बनि जाइछ ।

वैशाखक मास, शुक्लपक्षक त्रयोदशी किछुए काल पहिने वर्षाभए आकाश निर्मल भइगेल छल । विवेक आहिदिन परिवारक तीनू व्यक्ति कएँ सङ्गलए टहलबाक उद्देश्यसँ साँझ पड़ैत पड़ैत छलहौजा स्कायरक डेरासँ बहराए गेल छलाह, आओर नओ बजे जखन ओ 'लेकराड पार्क' सँ घुमैत - फिरैत काली-घाटक समीप पहुँचलाह तँ शोलाकए इच्छा भेलैन्ह जे कनेक कालीबाड़ी जाए भगवतीक दर्शन करैत जाइ । विवेक ? स्वयं आस्तिक छलाह । चारू गोटाए ओताह ट्रामसँ उतरि मन्दिरमे नैवेद्य ओ आरती दए जखन विवेक मन्दिरक सिंघ-द्वार पर पहुँचलाह तँ फाटकसँ बाहर दूनूकात पसरल भिख-मङ्गा सभक आर्त्तनाद हुनका दयार्द्र कए देलक । बेचारे लगले मनीवेग बहार करवालाए अपन कुरताक जेबीमे हाथ दैताहँ छलाह कि ताबत ओतबहिमे एक व्यक्ति आगूमे ठाढ़ भए कातर स्वरें बाजि छलैन्ह—
वावू ! भूखल बाभन छी, एक पाइ । भगवान ! निकें रखताह माइजा ?

याचकक रूप वस्तुतः हृदय - द्रावक छल । रत्ती-रत्ती दूहाथक मैल कपड़ा डौर मे लपेटल, दहिना हाथमे एक टीनक डिब्बिया, देहपर एक गुदड़ी, दाढ़ी-मोझ बढ़ल, केश झवरल, पेट पाँजर कएँ छुवैत, मुँहसँ फुफरी उड़ैत, आँखि निस्तेज मानू कोना कंकाल तत्क्षण जोखित भए छठि ठाढ़ भएगेल हो । चारू-गोटाक आँखि ओहि भिखुक पर गड़ि गेल । मुँह, कान, स्वरूप, बाणी, सब ओएह किछु; किन्तु आँखि आओर कान-पर दृष्टात् विश्वास करब कठिन । भिखु तकलक । एक निमिषमे सभक दिश हेठस ऊपरधरि निहारि गेल कीसहसा एकवेरि चीत्कार कए अड़ड़ाए खसि पड़ल । मन्दिरक सिंघ-द्वारपर कोलाहल मचि गेल । हँ, हँ, इएह थिका वौआ ! कहैत विवेकक पितियानि ओहि भू

लूण्ठित भिक्षुक कएँ उठएबालए भपटलीहि । भाव विवेकहु कएँ परिस्थितिक
वास्तविक ज्ञान भए गेलैन्ह । ओ भटपट ओहि भिक्षुक कएँ उठाए राजपथ
दिश बिदा भए गेलाह ।

दुइ रिक्शा टन् - टन् वरैत नरवाहक विवशताक मानू उपहास करैत शशि
सुधा सिक्त प्रशस्त राजपथे 'डलहौसी स्कायर' दिश निच्छोह भागल जाए
रहल छल ।

नील नभो मण्डलसँ निशानाथ मानू ओहि राति ओहि भिक्षुकदिक हेतु अमृत
वर्षा कए रहल छलाह । प्रकृति अपन कार्य कए चुकलि छलि । टीनक डिबिया
भिक्षुक क हाथसँ न जाने कतए हाथसँ छूटि खसि पड़ल छल, किन्तु हुनका
संज्ञा कतए कि प्रकृति मानव कएँ सभदिन अपन खेलओने बनओने रहि
गेल ?

जरखन अपने

मांगि कै खाइ नहि छी

मांगि कै कपड़ा नहि पहिरै छी

मांगि कै बस, ट्राम वा रेल पर नहि चढ़ै छी

वा बिनु भाड़ा देने कोनो मकानमे नहि छी तँ किएक

मांगि कै केवल पोथी-पत्रिका सभ पढ़ै छी ?

की अपनेक सहयोगक अभावमे ई 'वैदेही' एकमात्र सर्वोत्तम ओ सुन्दर मासिक
पत्रिकाक प्रकाशन बन्दे भै जाय । मास भरिमे केवल १) वा २५ नबका पैसा प्राथित
अछि । अपन पछिला चन्दा शीघ्र पठाऊ ।

गुल्लीक यात्रा

श्रीरयापानन्द

शत्रु साम्राज्य एक दीप अछि । लोलपुट सँ उत्तर-पूर्व कोणमे प्रायः आठ सए गज दूर । बीचमे एक छोट समुद्र (channel) छल । हम यद्यपि लोलपुट राज्यक परिक्रमा कयने रही डेग सँ परिधि नपवाक हेतु परन्तु ओम्हर हमर प्रायः दृष्टि नहि गेल वा गेलो छल होयत तँ किछु स्मरण नहि छल । जखन आक्रमणक समाचार आयल तखन अपनाकेँ प्रकट करव उचित नहि बुझल । हमर समाचार तँ ओहि देश जाय नहि सकैत छल कारण सभ प्रकारक यातायात दुनू देशक मध्य पूर्णतः बन्द छल । हम सम्राटक ओतय चुपहि चाप जोय शत्रुक जहाज कला कोसल लय अयवाक प्रस्ताव कयल । ई प्रस्ताव हमर सहर्ष सम्राट्सँ स्वीकृत भेल ओ राजमन्त्रिगणकेँ हमर इच्छानुसार सभ प्रकारक सहायता करवाक आदेश भेटलन्हि । हम जल - सेनाक मन्त्री द्वारा ई पता लगाओल जे ओ-का समुद्र (channel) मे पानि कतेक छैक । पता लागल जे मध्यमे सत्तारि 'गलमलक' अर्थात् छओ फीट पानि छैक शेष दुनू भाग बड़ जोर तँ चाटि फीट । तत्पश्चात् हम दोसरे दिन नुकाय के एहँ छोट पर्व तक पाछाँ सँ अपन छोटका दूरवीक्षण पत्र 'दूरवीन' लगाय देखि गनल तँ पैघ युद्ध पीतक संख्या पचास सँ बेसी नहि ओ छोटक ओहिसँ द्विगुण - त्रिगुणक मध्य । हम ई देखि डेरापर आपस चल अयलहुँ पर्याप्त लोहक तार नकुसी लागल आनय कहलियन्हि । दोसर दिन भिनसरे राति भरि परिश्रम कय प्रधान लौह मिन्त्री पचास नकुसी लागल गोली तागसन मोट लोहातार आनि देलक । हम सकालहि भोजन कय जुत्ता, मोजा, पेण्ट आदि सभ उतारि केवल एक जंघिया पहिरि द्रुतगति सँ छोटका समुद्र (channel) केँ पार कयलहुँ । मध्यमे किछु दूर अन्दाजे तोस गज हेलबो कयलहुँ । आध घण्टाक भीतरे जहाज सभक निकट पहुँचि गेलहुँ । जल-सैन्य जहाज सभपर कमसँ कम तोस हजार रह्य जे हमर सन दैत्यकेँ देखितहि जहाज सभ पर सँ कुदि जान लय पड़ा-यल । हम लगले हूकेकेँ एक-एक जहाजमे लगवय लगलहुँ । ओ सभ शरक बर्षा करय लागल जाहिसँ हमर कार्यमे अधिक समय तँ लगबे कयल देहो सदसो सुइ सँ जतेक क्षत - विक्षत हो से भेल । रच रहल जे अपन चसमा

हमलय गेल छलहुँ नहि तँ आँखि बँचैत की नहि से नहि कहि सकैत छी ।
हमर चस्मोपर पाँच - सात सर लागल किन्तु आर तँ हानि किछु नहि भेल
चस्माक काज किछु ढोल भय गेल । खसि पड़तय अवश्य परन्तु तगि स खूब
कसि कें दुनू कानमे बान्हि नेने छलहुँ । तखन हम सभ तारकेँ अपन पहुँचीमे
खूब कसो कें लपेटि लेल । तखन लगलहुँ खींचय । परन्तु जहाज सभ तँ
लंगर सभसँ ठोकल बान्हल छल । टससँ मस नहि भेल । तखन हम जंघियाक
जेबीसँ अपन छूरी बाहर कय एक - एकटा लंगरक डोरीकेँ काटि कय
अपन पाछाँ-पाछाँ लिचैत आनय लगलहुँ ।

ओहि देशक लोक हमरा पर्वत कायकेँ देखिए संत्रस्त ओ संचित भय दूर पर
ठाढ़ भेल शर चलवैत छल । ओ सभ जखन हमरा जहाजक लंगरक रस्सो
कटैत देखलक तँ भेलैक जे समुद्रमे जहाज सभकेँ भस्मिआय कतहु बहाय
नष्ट करवाक विचार अछि । परन्तु अपन संग जखन देखलक जे जहाज
सभकेँ अपहत कयने ओकर परम शत्रु राज्य लोलपुट दोसि नेने जाइत छी
तखन तँ अवर्णनीय विलाप करय लागल । थोड़ेक दूर आवि जखन शरवर्षासँ
सुरक्षित स्थान पर अगलहुँ तखन हम दमलेबाक हेतु किछु कालक हेतु ठाढ़
भय गेलहुँ । ओ जे गड़ल शर सभ रइय तरंग वाहर कय ओ किछु सुसताय
लेलहुँ । एतना कालमे समुद्रक तरंग सेहो कमि गेल । एहिसँ हमरा वेसो
हेलय नहि पड़ल ब्रिजाम्यत पद स समुद्र तटपर पहुँचि गेलहुँ । ओहीठाम
सम्राट् सदलबल हमर अपेक्षा परम उत्कण्ठित भय करैत छलाह । हुनका
लोकान अर्धचन्द्राकार रूपमे जहाज सभ केँ अबैत देखलन्हि परन्तु हमरा
नहि कारण हम आकण्ठ पानिमे रही । तखन तँ सशंकित होइत गेलाह जे
‘हम कोनो तरहेँ नष्ट भय गेलहुँ ओ शत्रु सभ जहाजपर आक्रमण करबाक
हेतु आवि रहल अछि । तावत कालधरि एहने धारणा रहलन्हि यावत् धरि
कि हम कम पानिमे आवि दृश्य नहि भेलहुँ । तखने सेन्यसँ रिक्त (खाली)
जहाज समूहकेँ देखैत गेलाह । तखन तँ हुनका लोकनिक हर्षक ठाँओ नहि
रहल । ‘धन्य धन्य’ ध्वनिसँ गगन-गण्डल जेना विदीर्ण भय गेल । हमहुँ
सम्राट्क ‘जय जयकार’ कयल । तत्पश्चात् जहाज सभ केँ सुरक्षित स्थानपर
राखि सम्राट्केँ जाय साष्टांग प्रणाम कयल । ओही हमरा वड़े स्नेहसँ उठाय
गर लगओलन्हि । ओहीठाम सन्निभगण्डलसँ परामर्श कय हमरा ओहि

देशक सर्वोच्च उपाधि 'मर्दक' देलन्हि जकर हम उचित कृतज्ञता ज्ञापन कयल ।

एहि अप्रत्याशित सेहो निमित्तप्राय मात्र बिना कोनो ज्ञानि सहने एतेक पैय विजय पर राज्यमे सात दिनक आमोद मनयवाक राजाज्ञा बढायल । राजधानीक शोभा तँ देखितहि बनय । सात दिन धरि भोजन-सात आमोद-प्रमोद होइत रहल । ई सभ भय गेला पर सम्राट् अपन प्रधान गुप्त - मन्त्रीकेँ पुनः हमरा ओतय पठ्योलन्हि । ई महाशय आवि पूर्ववत् हमर यथेष्टहुँस अधिक प्रशंसाकय ओ सम्राट्क हमरापर अगाध संतोषक वर्णन कए एक दोसर प्रस्ताव रखलन्हि । एकर सारांश ई जे हम पुनः शत्रु राज्यक अवशेष जहाज, नाओ सभटा लय आनि सम्राट्केँ दय दिअन्हि । तखन ओ अनुस बलोभय शत्रु राज्यपर आक्रमण करताह । युद्धमे दिनक विजय अवश्यम्भावी भय जयतन्हि विजय भेलापर ओहि देश अपन राज्यमे अन्त भुक्ति कय प्रतिनिधि (Viceroy) द्वारा शासन करताह । ई होयब ओहू देशक हेतु अधिक कल्याणप्रद होयतैक कारण लोलपुटक सम्राट बड़े वैधानिक, बड़े न्यायी छथि इत्यादि, इत्यादि । हम तखने दुम्हाल जे शासक वर्गक केहन दुरभिलाषा भय जाइत छन्हि । पुनः हम एहि प्रस्तावक उत्तरक हेतु समय चाहत । पूर्वक प्रस्ताव स्वरुत छलन्हि एहि वेरूक परहमनार्थ तँ हम एकदिनक समय सोचै लय लेल । गुप्त मन्त्री महाशय बिदा भेलाह ओ ओहू कालमे सम्राट्क अनुग्रह सभ बारंवार स्मरण करओलन्हि ।

हम यादतू धरि जागल छलहुँ तावतू धरि यैह विचार कयलहुँ जे एक स्वतन्त्र देश ओ वीर राष्ट्रकेँ परतन्त्र बनायब उचित की नहि । कोनो दृष्टिकोणसँ ई उचित नहि बूझि पड़ल । हम शपथो जे खयने रही से सम्राट् या हुनक देशक रक्षा करवाक तँ हुनक संकारण वा अकारण शत्रुक सर्वनाश करवाक नहि खयने छलहुँ । दोसर, हमरा एही सम्पूर्ण देशमे जीवन वितायब नहि अभीष्ट छल । तेसर, हमर व्यक्तिगत ओ देश कोनो प्रकारक अवलाह नहि कयने छल तखन हम व्यर्थ एतगोट अन्याय करी से उचित नहि । हम अपन विचारपर दृढ़ भय जखन ओ गुप्तमन्त्री हमर निर्णय सुनबाक हेतु अयलाह तखन निर्भीक भय ई विचार सुनओलन्हि । सम्राट्क आज्ञापालन

मे असमर्थताजन्य क्षमा-याचना कयलियन्हि । ई उत्तर हमर जखन मन्त्री (Council) मे पहुँचल तखन एहिपर दीर्घकालिक वाद - बिवाद भेले । अन्तमे वृद्ध विवेकी कतिपय मन्त्री सभक हमर उत्तरक समर्थन कयलापर हमर कथन स्वीकृत भेल । परन्तु सम्राट्क हृदय हमरापर कलुषित भय गेलन्हि । हुनक अभिलाषा जे हम पूर्ण नहि कय सकलहुँ से अपराध ओ क्षमा नहि कय सकलाह । दोसर कहएक दरबारी हुनका हमर विरुद्ध उसकयबो करथिन्ह । आगिकें बसातक संग ई क्रोधाग्नि दिन - दिन प्रज्वलित होइत गेल । हमर सर्वनाशक गुप्त मन्त्रणा होमय लागल । एहि चक्रचालिक सूचना हमरा एक दरबारी मित्रसँ होइत छल परन्तु गुप्त रीतिसँ । राजा-महाराजेक ओहिठाम पैघ सेवाक कतेक मूल्य रहैत छैक यदि एकोवेरि हुनका सभक इच्छा पूर्ति नहि भेल से आव हम खूब बृम्हि गेलहुँ ओ सतर्क रहय लगलहुँ । किछु दिनक पश्चात् संभव तीनि सप्ताह पर शत्रुदेशसँ राजदूत सन्धि वार्ता लय आयल । यस्मात् दैन्य भावसँ सन्धिक प्रार्थना छल तस्मात् शीघ्र अधिक सुविधाजनक भय गेल । एकर विवरण लीखि पोथीक आकार बढायब अयुक्तगर । सन्धि करबामे हमरो किछु हाथ छल कारण राजमे हमर एखनो धरि पर्याप्त प्रतिपत्ति छल । हम यदि एहिमे नहि भाग लितहुँ तँ शत्रु राज्यकेँ एतबो सुविधा नहि भेटितैक । एहिसँ शत्रुदेशक राजदूत सभ हमरा दोसि आकृष्ट भय अपेक्षित भय गेल । राजकीय सभकाज भय गेला पर ओ लोकनि हमर डेरापर हमरासँ भेंट करय अवैत गेलाह । हमहुँ उचित सम्मान-पूर्वक वार्तालाप कयल । ओ लोकनि अपन सम्राट्क नामसँ हमरा अपन देश अयवालय साग्रह निमन्त्रण कयलन्हि । हम एहि निमन्त्रणकेँ सहर्ष स्वीकार कयल । चलैत काल ओ लोकनि हमर अमानुषिक बल पराक्रमक देखवाक इच्छा प्रकट कयलन्हि । हम की देखबित्तिअन्हि तथापि कूदि-फानि जे देखओ-लिअन्हि ताहीसँ स्तम्भित होइत गेलाह । हुनका लोकनिकें ई कहि विदा कयल जे जखनहि हमरा सम्राटसँ अनुमति भेटैत तैखन हम अहाँक सम्राट क दरबारमे उपस्थित होयब । तावत् हमर विनम्र अभिवादन अपन सम्राट् केँ कहवन्हि ।

एकर दू तीनि दिनुक पश्चात् सम्राट्क ओतय 'ब्लेफुसकू' देश जयबाक अनु-मतिक हेतुक प्रार्थना कयल । भाग्यवश हमर ई प्रार्थना सम्राट स्वीकार

कथलन्हि परन्तु बूझि पड़ल जे किछु असन्तुष्टे भय कें । दरबारमे कानाफुसी होमय लागल जे हम शत्रु राज्यमें मिलय जा रहल छी । परन्तु आज की हो अनुमति तँ भेटि गेल छल । हम अपन सम्राट्सँ राजोचित उपहार मांगि संग लय 'ब्लेफुसकू'क हेतु एक दिन भोजनोपरान्त विदा भय प्राय; एक घण्टा मे ओतय पहुँचि गेलहुँ ।

यद्यपि लोलपुट देशक वर्णन पृथक् रूपमे विस्तार पूर्वक करवाक इच्छा अछि तथापि एहिठाम संक्षेपमे किछु कहब आवश्यक । देशवासोक साधारण नमती अछि छत्रो इच्छाँ न्यून । एहीक्रमसँ सभ जीवक बुझब उचित, संग-संग गाक्ष-वृक्षक सेहो सैह हिसाब । नामसँ नाम घोड़ा ओ बड़द चारिसँ पाँच इच्छ नाम, भेँड़ी बकरी डेढ़ इच्छ, वत्तक हमरा लोकनिक देशक बगड़ा एतेटा, एतादृशे परिमाण सभमे छैक ओहि देशक सभसँ छोट कीड़ी तँ हमरा लोकनि कथमपि नहि देखि सकैत छिऐक । प्रकृति अपन सभटा कार्य सम-तुल करैत अछि । ओहने दृष्टिओ ओकर सभक रहैक । ओ सभ छोटसँ छोट वस्तु तँ देखि सकैत अछि परन्तु लगक दूरक नहि । एकर यह एक दृष्टान्त पर्याप्त होयत जे माछी के एतेटा बगेड़ीकें निकवैत अछि । हम जखन एक भनसीआकेँ निकवैत देखल तँ आश्चर्य सँ भरि गेलहुँ । ओ जखन एक छोड़ोकेँ अदृश्य सुइसँ अदृश्य रेसमी कपड़ाक रुमाल कहैत देखल तँ कतेक आश्चर्य भेल से की कहू । लोलपुटक बड़कासँ बड़का गाछ सात फीट सँ ऊँच नहि अछि । एकटा सभक फुनगी हम सुट्टी मुननहि छुनि लेल । अन्य वनस्पतिक एही हिसाबक आकृतिक अनुमान कर्तव्य । फलहुक सैह हिसाब अन्न, गहूम, धान इत्यादि तँ ततेक छोट जे अदृश्य प्राये एकर स्पर्श मात्रसँ अनुभव होयत ।

दिनका लोकनिक विद्वत्ताक सम्बन्धमे एहिठाम उल्लेख नहि करैत छी । केवल लिखवाक क्रम कहैत छी । विद्वत्ताक सम्बन्धमे एतवे कहैत छी जे प्रायः सभ प्रकारक विद्या एहि देशमे चिरकालसँ चल अवैत अछि । अस्तु, लिखवाक क्रम हमरा लोकनिक जकाँ दहिनसँ वाम दीसि नहि, ने अरबी-फारसी जकाँ वामसँ दहिन ओ ने चीनवासी जकाँ ऊपरसँ नीचाँ किन्तु अँगरेज महिलाक सदृश कोना-कोनो ।। अन्तर] सभ भ्रमाह नहि जेना फार-

सीक छैक जे बिन्दु 'मुक्तता' एम्हरसँ ओषार भेला की अचारे बयल गेल ।
 दिनका लोकनि अपन मुर्दा 'शव' ने जाइत छथि हमरी लोकनि जकाँ ने
 सन्यासी प्रभुतिक सहस जलमे समाधिस्थ करैत छथि ओ ने पारसी जकाँ
 स्तंभ पर लिखि गिद्ध चिल्लसँ खोजैत छथि । ई सभ किम्तान ओ मुसल-
 मान जकाँ मुर्दा माटिमे गाड़ैत छथि परन्तु मुर्दा नीचाँ ओ पैर ऊपर एकदम
 ठाढ़ । एकर ई कारण थीक जे दिनका लोकनिकेँ अपन धर्म - शास्त्रमे लिखल
 रहबाक हेतु ई धारणा छन्हि जे एगारह हजार चन्द्र (मास) पर पृथ्वीक
 छन्ठन होयत । मुर्दा सभ जीवि उठत । पृथ्वी चौपट अछि । सुतराँ एना मुर्दा
 सभ अपन पैर पर ठाढ़ भय जायत । नहि तँ मुर्दा पर ठाढ़ भेलासँ खसि
 पड़त जाहि सँ पुनः नष्ट भय जायत ।

भाव आचार ओ नियमक सम्बन्धमे कहैत छी । राजनियम 'कानून' सभ
 बड़े कठोर अछि । एहि सँ दुर्वृत्ति बहुत कम होइत अछि । परन्तु अपराधी
 अर्थात् आरोपित अपराधी (accused) व्यक्ति यदि निरपराध प्रमाणित भय
 जाइत अछि तँ अपराध आरोपक अभित्यागि (accuser) कें मृत्यु-दण्ड तँ
 होइतहि छैक तदतिरिक्त ओकर जमीन - जाल वा मालसत्तासँ निरपराधक
 क्षति पूर्ण कयल जाइत छैक । ई क्षति पूर्ति ओकर समय जे नष्ट भेल तें, दण्ड
 सँ आशंकित भेल तें, कारागृहमे यातना जे सहल तें ओ पैरवी करवामे
 जे आन आन खर्च पड़लैक तें कयल जाइत अछि । यदि वादी अभियोगी
 (accuser) क जयदातसँ पूर्णतः क्षतिपूर्ण नहि भेल तँ प्रतिवादी अभियुक्त
 (accuser) कें राज्य कोष सँ देल जाइत छैक । एवं ओकर निरपराधी
 होयबाक डिगिडिगिआ पीटि घोषणा कयल जाइत छैक ।

दिनका लोकनि चोरिसँ ठकनाइ जालफरेवकें अधिक दण्डनीय मानैत
 छथि । कथ्य छन्हि जे चोर सँ सतर्क रहि बाँचि सकैत छी परन्तु ठकसँ जाली
 फरेवी सँ निश्छली निष्प्रपञ्ची व्यक्ति कथमपि नहि बाँचि सकैत अछि
 धार्मिक (honest) प्रजाकें एहिसँ रक्षा करब राजसत्ताक कर्तव्य थिकैक ।
 अन्यथा राजसत्ताक अस्तित्वे निरर्थक भय जाइत अछि ।

यद्यपि हमरालोकनि प्रत्येक वा सभ राज शासन विधान (Government)
 क दृढ़ आधार मानैत जाइत छी-एक दण्ड ओ दोसर पुरस्कार । परन्तु एहि

सिद्धान्तक पालन हम एहि देश लोलपुटक अतिरिक्त कोनो देशमे नहि देखैत छी । केवल दण्ड देनिहार सभ विधान अछि । सेहो कानून एहि प्रकारक अछि जे नब्बे प्रतिशत अपराधी यदि रुपैया रहैक जाहि बलसँ नोक ओकील-बारिष्टर कय सकैत अछि ओ पुलिसक तोपण कय सकैत अछि तँ हत्याहुक अपराध सँ मुक्त भय जाइत अछि । पुरस्कार तँ प्रायः कोनो देशमे नहि भेटैत छैक । किछु नामक खर्चा देल जाइत छैक । सेहो ओकील-मुखतार लय ओकालत खाना-मुखतारखानाक हेतु जयलैत छैक प्रमाणित निरपराधकें किछु नहि भेटैत छैक । लोलपुट देशमे जे केओ तेहत्तरि चन्द्र (मास)मे कोनो प्रकारक अभियुक्त नहि होइत अछि से राजसत्तासँ एक प्रतिष्ठा पत्र पवैत अछि जाहिसँ राजसभामे ओ सम्मानास्पद होइत अछि । ओ किछु अन्यो प्रकारक सुभीता भेटैत छैक । एकर नाम 'स्नेहपाल'क सूचीमे लिखल जाइत छैक । ई उपाधि नामक आदिमे जोड़ि देल जाइत छैक जे एक गौरवक विषय थीक । ई उपाधि कौलिक (hereditary) नहि थीक । एहूसँ लोलपुटवासीक बुद्धिमत्ता प्रमाणित होइत अछि कारण कौलिकताक मिथ्या दंभक दोषक परिहारार्थ ई नियम अछि । अपनो देशमे यदि यह नियम रहैत तँ बड़ नोक छल । तात्पर्य जे डाक्टरक बेटा डाक्टर, ओकालक बेटा ओकील सदृश ब्राह्मणक पूर्ण निरन्तर ओ कर्महीन बेटा, साहित्य ओ दर्शनक मिश्र ज्ञाता मिश्रक एको शास्त्रक ज्ञाता बेटा मिश्र, स्वाध्याय कनिहार ओ करओनिहार उपाध्यायक पूर्ण विपरीत गुणावेत बेटा उपाध्याय (भ्रा) इत्यादि मिथ्या अभिमानो बगै नहि रहैत । तात्पर्य जे गीताक अनुसार अत्येकक स्वभाव ! प्रभाव ओ गुणक अनुसारे व्यक्तित्वक निर्धारणक नियम रहैत तँ देशक बड़ उपकार होइत । यद्यपि दिनको लाकनिक देशमे राजा बेटे राजा होइत छथि परन्तु जनमत लयकें । एतद् विषयक ई नियम छैक जे राजा (सम्राट्)क मरि गेला पर लोकमत लेल जाइत अछि जे राजाक बेटे, जेठ-छोटक विचार नहि कय, राजा होथि वा जन-साधारणमे निर्वाचन हो । यदि राजाक कोनो बेटा योग्य रहैत छथिन्ह तँ ओएह राजा होइत छथि अन्यथा निर्वाचित राजा होइत छथि । तात्पर्य जे प्रथम विचार (preference) मृत राजाक बेटहि कयल जाइत छन्हि । तस्मात् एहि राज्य कें ने राजतन्त्र राज्य कहि सकैत छी ने प्रजातन्त्र कहि सकैत छी । सुन्दर मिश्र विधान अछि । न्यायालयमे तहि

हिनकहि एहन न्याय मूर्तिक स्थापना कयने छथि जकरा छोटो आँखि दू आगाँ दू पाछाँ ओ एक-एक दुनू कम पट्टी लग छैक, दहिन हाथमे खुजल असर्फीक भोरी ओ वाममे अनिष्कासित अर्थात् कोष (मिआन)मे देल तरुआरि छैक । एहिसँ ई देखाओल अछि जे न्यायमे प्रथम उद्देश्य वा कर्तव्य पुरष्कार देव थीक ओ दोसर कर्तव्य दण्ड ।

सभ कर्मचारीक नियुक्तिमे सर्वप्रथम चरित्रक विचार कयल जाइत अछि तखन योग्यताक । हुनका लोकनिक ई धारणा छन्हि जे सच्चरित्र मात्र शासन कार्य उचित रूपसँ कय सकैत अछि योग्य चरित्रहोन नहि । सत्य कथा, कतबो योग्य रहथु परन्तु यदि असच्चरित्र छथि तँ राजकार्य उचित रूपसँ नहि करताह । एहि विषयपर अधिक कहबाक आवश्यकता नहि जनिका आँखि अछि से देखितहि होयब । हुनका सभक ई दृढ़ विश्वास छन्हि जे ईश्वर ई नहि चाहैत छथि जे कोनो विषय विशेषतः राज्य शासन कला पूर्ण रहस्यमय हो जकरासँ थोड़बेक विशिष्ट-विशिष्ट व्यक्ति परिचित रहथि अवदोष हिनका लोकनिक मूह तकैत पछलगुआ भेल बैसल रहय । ईश्वरक ओहिठाम सँ केओ पैघ केओ छोट, केओ योग्य ओ केओ अयोग्य भयकँ नहि अबैत अछि । सामाजिक त्रुटिपूर्ण संगठनक जाहिमे राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक इत्यादि सभ प्रकारक विषय सन्निहित छैक से तकर प्रभाव सँ एतेक कृत्रिम भेदभाव बनल अछि । मनुष्योचित गुणक त्रुटिक कारणसँ समाजमे भेदभाव नहि अछि । केवल सत्ताक बलक कारणसँ अछि । परञ्च सत्तावान् व्यक्ति मनुष्य धर्मोचित गुणसँ विहीनो रहैत राज्य शासक होइत छथि प्रत्यक्ष रूपसँ वा परोक्ष रूपसँ । परन्तु एहिसँ जनताक उपकार कथमपि नहि होइत छैक । एही सिद्धान्तपर लोलपुटमे ई नियम छैक जे विशिष्ट-विशिष्ट विभाग सभ यथा अध्ययन, चिकित्सा आदि जाहीमे पर्याप्त अध्ययनक आवश्यकता छैक तदतिरिक्त सच्चरित्रता मात्रक आधारपर मन्त्रो आदि कर्मचारी सभक नियुक्ति हो । केहनो योग्यता संपन्न व्यक्ति यदि सन्देहात्मक चरित्रक होथि तँ हुनका कोनो दायित्वपूर्ण कार्य नहि देल जाइत छन्हि । कारण एतादृश व्यक्ति राष्ट्रक हेतु बहुत अधिक आपत्तिजनक मानल जाइत छथि । स्वल्प ज्ञानी धार्मिक वा सच्चरित्रसँ ओतेकटा राष्ट्रक अपकार नहि

भय सकैत अछि जतेकटा असच्चरित्र योग्य व्यक्तिसँ । कारण चतुर अस-
च्चरित्रक प्रपंच वा छल-कपट व्यवहार भटदय नहि पकड़ल जायत । जखन
पकड़ल जाय सकत तखन बहुत किछु राष्ट्रक अपकार भय गेल रहत । परन्तु
निश्छल धर्मभीरु एवं यदि अज्ञानवश कोनो एहन काज भइओ जायत तँ
समय पर देखल जाय सकैत अछि ओ प्रतिकृत भय सकैत अछि ।

अपित्र नास्तिक अर्थात् अदृष्टसत्ता जकर इच्छा बिना कोनोटा कार्य नहि
होइत अछि ओ जे अदृष्ट रूपमे दण्ड ओ पुरस्कारे दैत अछि तकर अस्तित्व
नहि माननिहार व्यक्ति राज्यक कोनो पद पैघ वा छोट ताहि पर नहि रहि
सकैत अछि । राजा जनिक प्रतिनिधि थिकाह ओ अपन स्वामी जनिक ओ
प्रतिनिधित्व करैत छथि तनिक अस्तित्वकें अस्वीकार कयनिहार व्यक्तिकें
कोना राखथि । यदि राखथि तँ मूर्खताक अतिरिक्त आओर की होयतन्हि ?

हिनका लोकनिमे कृतघ्नता एक बड़ पैघ अपराध मानल जाइत अछि । जेना
सुनैत छी जे कतिपय अन्यो देशमे मानल जाइत अछि । एकर ई कारण कहैत
छथि जे जे व्यक्ति अपन उपकार कर्ताक कृतघ्न होइत अछि अर्थात् उपकार
नहि करैत अछि से संपूर्ण समाजक महाशत्रु थोक । जकरासँ अपकृत भेल
अछि तकर जखन उपकार नहि करैत अछि तखन जे जे एकर कोनो उपकार
नहि कयलक अछि तकर उपकार ई कोना करत ? अनुपकारी व्यक्ति समाजमे
रहब कयमपि उचित नहि । सुतरां एतादृश व्यक्तिकें समाजसँ मृत्यु-दण्ड
दय वा निर्वासित कय हटायब न्याय थीक ।

हिनका लोकनिक माय-बापक सन्तानक प्रति कर्तव्यहुक दोसर प्रकारक
धारणा छन्हि जे माय बापक अभिभावकत्वमे सन्तानक कल्याण नहि भय
सकैत छैक । तहि राज्यक ई नियम छैक जे पाँच वर्षक नेना सभकें राज्य
अपन अभिभावकत्वमे राखि शिक्षा दैत छैक । एहि हेतु जन-संख्याक अनु-
सार पर्याप्त संख्यामे एक प्रकारक संस्था स्थापित अछि जाहिमे देशक समस्त
नेना रहि शिक्षा पवैत अछि । एहि संस्थामे बालकक हेतु एक भाग ओ
बालिकाक हेतु दोसर एक भाग छैक । यद्यपि सहपाठ पन्द्रह वर्षक पश्चात्
निषिद्ध अछि तथापि कतिपय कला यथा—गान-कला, नृत्य-कला, चित्रांकण-
कला ओ पाक-कलामे एकहि ठाम शिक्षाक व्यवस्था रहैत छैक । एहि संस्थामे

कमसँ कम प्रत्येकमे एक विशेष मनोविज्ञानक परिणत रहैत छथि । हुनक कर्तव्य ई थिकन्हि जे प्रत्येक नेनाक मनो वृत्तिक पर्यवेक्षण कय ओकर शिक्षा-क्रमक निर्धारण करथि जाहिसँ संस्कारक विरुद्ध कोनो प्रकारक शिक्षा देवाक अथ परिश्रम नहि कयल ओ कराओल जाय । एहिसँ ई होइत छैक जे अपन रुचि ओ संस्कारक अनुसार शिक्षा पओने नेना अपन विषयमे शीघ्र पारंगत भय जाइत अछि । तहि एकोय नेना परीक्षामे अनुत्तीर्ण नहि होइत अछि ।

एहि संस्था सभमे प्रत्येक दैनिक क्रियाक यथा उऽव, शौचादिक क्रिया, स्नान, ईश्वर प्रार्थनासँ सायंकाल सुतब पर्यन्तक समय निर्धारित छैक जकर पालन अवश्यमेव कर्तव्य कनेको एहार - ओहार नहि होयबाक चाही । एकर उत्तर-दायित्व केवल छात्र पर नहि अभि भावक शिक्षको पर रहैत छन्हि । घनिकक बेटा-बेटी रहथून्ह वा दरिद्रक भोजन, कपड़ा लत्ता, ओछाओन-बिछाओन इत्यादि समान रूपक भेद एतवे जे मायबाप यदि उच्च शिक्षाक हेतु अतिरिक्त व्यय वहन करब स्वीकार करथि तँ अतिरिक्त उच्च शिक्षाक सभ नियुक्त होइत छथि हुनकर नेनाक हेतु । पौस्तिकी विद्याक शिक्षासँ वेसी सत्-आचारक शिक्षापर ध्यान राखल जाइत अछि । छात्र वा छात्री राजाक होथु वा राजकुलक सभकेँ अपन काज अपनहि करय पड़त छन्हि । एतवा धरि जे सोम दिन जे दिनका लोकनिक अनाध्याय ओ विश्रामक दिन थिकन्हि ताहि दिन अपन कपड़ा - लत्ता अपनहि परिष्कार करैत छथि । लोटा-थारी पर्यन्त अपनहि धो-माजि यथा स्थान रखैत छथि । छोट - छोट नेनाक हेतु किञ्चित् सुविधा छन्हि । माय-बाप वा अन्य सम्बन्धिक वर्षमे केवल दूवेरि सेहो एक घण्टाक हेतु आवि अपन सन्तान केँ देखि सकैत छथि ओ गप्प-सप्प कय सकैत छथि । सेहो शिक्षालयक एक आचार्यक सोझाँ, परोक्षमे नहि । गप्प-सप्प फुसुर - फुसर नहि ओ ने दुलार - मलारक घर सँ खेलओना वा कोनो प्रकारकक मिष्टान्न इत्यादिक सन्देश देव वर्जित ।

एहि शिक्षा-संस्था सभक हेतु सम्राट् स्वयं कतेक कोन घरकेँ दातव्य से निश्चित करैत छलाह परन्तु एहि हेतुमे विश्वासित निर्धारक (assessor) लोकनि नियुक्त छलाह । ककरो आपत्ति कयला पर विशेष पैघ कर्मचारीकेँ पुनर्विचार करवाक हेतु देल जाइत छन्हि । अन्तिम निर्णय सम्राट्हीक रहैत छन्हि । जे

प्रजाक फिल्लुओ देशक योग्य नहि रहैत अछि तकरा दीसिसँ राज्य दैत छैक एवं प्रकारसँ शिक्षा सशुल्क ओ निःशुल्क दुनू अछि । इहो देशक एक अपूर्व नियम अछि ।

एहि संस्थामे सभ नेनाकेँ समान समय रहवाक नियम नहि छैक । व्यवसायी ओ श्रमिक अर्थात् कृषक ओ कुंभकार (कुम्हार), चर्मकार (चमार), लौह-कार (लोहार) इत्यादि व्यवसाय कयनिहार केँ यथेष्ट साक्षर बनाय राजकीय ओ वैयक्तिक कारखाना सभमे शिक्षार्थ तीन वर्षसँ पाँच वर्ष पर्यन्त रहय पड़ैत छन्हि । अपन-अपन रुचिक अनुसार कार्यदत्त भयगेलापर अपन खेतमे वा छोट - छोट कारखानामे काज करथु वा सरकारी कृषि विभागमे वा व्यवसाय कारखानामे वेतन पर नियुक्त होथु । वेतन पर्याप्त भेटैत छैक परन्तु एक रंग । ई नहि जे उच्च कर्मचारी केँ अधिक ओ निम्न कर्मचारीकेँ कम । तखन भेद छैक केवल सम्मानक । तखन जे केओ केवल उच्च पौस्तिकी विद्याक अर्थी (इच्छुक) छथि से उच्च शिक्षालयमे पूर्ण शिक्षा लाभक अवधि धरि रहैत छथि । वाणिज्य विद्यार्थी लोकनि पौस्तिकी वा सैद्धान्तिक (Theoretical) शिक्षा पावि व्यावहारिक शिक्षाक हेतु राज्यक वाणिज्य विभागमे अथवा वैयक्तिक वाणिज्यालयमे दू तोनि वर्ष रहैत छथि । एहि देशमे सामूहिक ओ वैयक्तिक दुनू कार्य-प्रणाली अछि ।

बालिका सभक हेतु रहवाक नियम ई अछि जे कमसँ कम पाँच वर्ष संस्था-शिक्षालयमे रहव आवश्यक । दसवर्षक भय गेलासँ अपन - अपन अभिभावकक ओहिठाम चलि जाइत छथि । कारण, विवाहक वयस एगारहसँ लय तेरह पर्यन्त रहैत छन्हि । एतबा दिनमे विवाह यदि नहि भेल तँ आजन्म कुमारी व्रत धारण स्त्री-धर्म-शिक्षाक कार्य करैत छथि । बहुत गोटेय बाप-हिक घरमे गृहकार्यमे लागल रहि जाइत छथि । विवाह होइत छन्हि अपन शिक्षालयक प्रतिष्ठा-पत्रक आधार पर । हिनका लोकनि ने खूब पढ़लि अछि तँ ओ ने सुन्दरि अछि तँ विवाहार्थ कन्या पसिन्द करैत छथि । केवल गृह कार्य-पटुताक विचार करैत छथि ।

हिनका लोकनि बड़े आत्म सम्मानी छथि । तहिँ आनक अपमान प्रायः नहि करताह । भिन्नादत राज-नियमक विरुद्ध मानल जाइत अछि । कदाच यदि

ककरो एहन दशा शारिरिक बलक दुर्बलता सँ वा परिवार रहितभय गेला सँ भय जाइत छैक जे एको साँभ निराहार रहि गेल तँ समाजे सर्वप्रथम ओकर आहारक ओरिआओन कय दैत छैक बिनु ओकर कहनहि । तत्पश्चात् सरकारक दीसिसँ कराय दैत छैक । ई सभ निराहार रहि प्राण दय दैत भीख नहि माँगत । सरकारी एक विभागे छैक एहि हेतुक जे देखैत अछि जे केओ भीख त ने मंगैत अछि । संगहि संग केओ पूर्णतः कमाय खयवासँ अक्षम तँ ने भयगेल अछि । एको दिन दुनू साँभ यदि केओ उपास पड़ि गेल तँ ओहि महल्ला (टोल)क ओहि विभागक कर्मचारी दण्डित होइत छथि ।

एतादृशे वेश्यावृत्ति निषिद्धेता नहि परञ्च दण्डनीय थीक । अविवाहिता नर्तकीक व्यवसाय नहि कय सकैत छथि । जारज पुत्रक माय प्रायः आजन्म कारावासक दण्ड पवैत छथि । विधवा अपुत्रवतो यदि वृद्धा नहि रहथि तँ विवाह करय पड़ैत छन्हि, नहि कयने दण्डनीय । एहि नियमसँ सत् चरित्रताक एहिठाम राज्य अछि । तखन विशाह सेहो एक छीक अछैत दोसर नहि भय सकैत अछि । हँ, यदि न्यायालयमे दोसर छीक आवश्यकता प्रमाणित कय लथि तँ कय सकैत छथि । ई बड़ कचित होइत अछि ।

हिनका लोकनि भगवान्कें निराकार ओ साकार दुनू प्रकारक मानैत छथि । तात्पर्य जे निराकारक मानैत प्रत्यक्ष रूपक प्रतीक सूर्य ओ चन्द्रकें मानैत पूजन करैत छथि । एहू दुनूमे चन्द्रमा यस्मात् सौम्य छथि ओ सूर्य यस्मात् उग्र छथि तस्मात् चन्द्रमा कें ज्योति रूप भगवान्क प्रधान प्रतीक मानैत प्रति पूर्णिमासी कें दूध ओ उज्जर फूल सँ पूजन करैत छथि । कार्तिकी पूर्णिमाकें साम्बतसरिक विशेष पूजन करैत छथि । पूजनमे पुरोहितक कोनोटा काज नहि । एहि देशमे धर्माचार्य लोकनि छथिए नहि, केवल राज्यसँ संरक्षित एक धर्मग्रन्थक वेत्ता रहैत छथि जे समय पर धर्मानुष्ठानक सम्बन्धमे सम्राट्कें विचार दैत छथिन्ह । एवं शिक्षा - मन्त्रीकें देशक शिक्षालय सभमे धार्मिक शिक्षाक आदर्श दैत रहैत छथिन्ह । सामान्य धर्म वा सञ्चरित्रता पर विशेष धर्म सँ अधिक ध्यान दिआयव हिनके कर्तव्य थिकन्ह ।

एहि देशमे स्वतन्त्र व्यवसायी ओकील लोकनि नहि छथि । ओ ने असीमित हिनक सभहिक संख्यो छन्हि । अभियोगक (मुकदमाक) संख्याक परिमाण

हिंसा कय ओकर द्विगुणसँ दस-पाँच अधिक ओकील सभक सरकार द्वारा नियुक्ति होइत छथि । वेतन सरकारे दैत छन्हि । वादी-प्रतिवादीसँ एको पाइ नहि लय सकैत छथि । न्यायकर्ता वा विचारक द्वारा एक - एक ओकील दुनू पक्षक देल जाइत छन्हि । जे वादी वा प्रतिवादी मुकदमा हारि जाइत छथि तनिका सभसँ लय ओकीलक वेतन देवाक कोषमे राखल जाइत अछि जाहिसँ अन्य कोष (fund) सँ एहि हेतु नहि व्यय करय पड़ैत छन्हि । मिथ्या साक्षी देनिहार कें आजन्म सपरिश्रम कारावासक दण्ड भेटैत छन्हि । एहिसँ देशक न्यायविभाग हमरा बुझने संसार भरिमे सभसँ सुन्दर अछि । एतादृशे व्यवस्था चिकित्साविभागक अछि । प्रति सहस्र एक चिकित्सक रहैत छथि जनिक वेतन राज्यहिसँ भेटैत छन्हि । रोगीसँ एक पाइ पर्यन्त शुल्क (fees) लेब निषेद्ध । औषध सभ राज्यसँ ओहिना बिना मूल्ये देल जाइत छैक । चिकित्सकमात्रकें एके समान वेतन । पदमे अवश्य भेद । प्रतिशत रोगीकें निरोगी करबाक हिसाबसँ पदवृद्धि संग - संग सम्मान बढ़ैत छैन्ह । वर्ष दिनपर एकर हिसाब होइत छैक जे कोन चिकित्सक प्रतिशत रोगी कें रोगमुक्त कय सकलाह अछि । एकर सूचना पत्र चिकित्सा-मन्त्री सम्राटक समक्ष रखैत छथि । तखन विचार होइत छैक जाहिमे रोगक साध्यता ओ असाध्यता वा कठिनताक विचार सेहो कयल जाइत छैक । तखन सफल चिकित्सक लोकनि कें सर्व साधारण (public) सभामे वजाय प्रतिष्ठा-पत्र सम्राट् स्वयं अपन हाथसँ दैत छथिन्ह । विशेष फल चिकित्सककें नगद पुरस्कारो भेटैत छन्हि । ई नियम चिकित्सक ओचिकित्सक (Lady doctor) दुनूक हेतु समान अछि ।

आब हम पाठकक मनोरञ्जनार्थ हमरा हेतु जे राज्यक दीसिसँ व्यवस्था आयोजन (वन्दोवस्त) कयल गेल रह्य खयवा - पीवाक आदि तकर संक्षेपमे वर्णन करैत छी । खयवाक हेतु एक छोट चौकी ओ वैसवाक हेतु एक आराम कुर्सी ओ एक कुर्सी हम अपनहि कोनहुना बनाय नेने छलहुँ । राज्यक अनेको विशाल वृक्ष सभ एहिमे समाप्त भयगेल । दू सय स्त्री-दर्जी हमर कमीज ओ ओछाओन-विछाओन बनयवाक हेतु नियुक्त छलि । देशक सभसँ मोट कपड़ा जे हमरा लोकनिक मलमलहुँ कतेक बड़ पातर छल तकर दू तीन प्रकारक हमर कमीज बनल । ओ सभ नाप जे लेलक से हम चित्त भय पड़ि रहलहुँ तखन एक गोठय हमर गर्दनि पर ठाढ़ि, दोसर पेट पर ओ तेसर नपवाक डोरी दुनू गोटाक हाथमे धरवैत नाप लेलक । एहिसँ अतिरिक्त हमर दहिनि अँगुठाक नापलय पहुँचीक नाप कयलक । एहूसँ ठीक-ठीक नहि होइत यदि हम अपन पुरान कमीज भूमि पर नहि पसारि दिति-एक । परन्तु चावस कहो ओ सभकें ठीक - ठीक एको तिल एम्हर-ओम्हर नहि

हमर कमीज सीबिए देलक । रहल कोट से तीनिसय दर्जी मीलि तैयार कयलक । नाप लेबाक क्रम परन्तु दोसर प्रकारक । हमरा ठेहुँनक भरसँ बैसय पड़ल । ओ सभ एक सीढ़ी लगाय हमर गर्दनि पर ठाढ़ भय एक रस्सी भूमि धरि खसाय कोटक नमतीक नाप लेलकै । डाँड़क ओ बाँहिक नाप हम स्वयं अपनहि कय देलिके । हमरे डेरापर कोट तैयारी भेल कारण आन घरमे तँ कोट अँटितैक नहि । ई लागय सुजनी (patch work) सन भेद एतवे जे हमर एक रंगक छल ।

हमरा लय तीन सय भनसिआ नियुक्त रहय । ओकरा सभक रहवाक हेतु फुसिक खोपड़ी सभ बनल छलैक जाहिमे सपरिवार रहैत जाय । एक गोदय हमर दूध रोटी मात्र भोजन बनाय सकय । सीढ़ी पर दैने भार पर टाँगि आनि हमर खयवाक चौकी पर राखि देल करय । खयवाक वासन सभ हमरा लय बड़ कठिनतासँ वड़ खर्चसँ राज्यसँ बनवाओल गेल छल परन्तु एकोटा अखण्ड रूपक नहि । कारण ओतेकटा थारी वा वाटी वा गिलास लय अयवा - जयवामे अत्यधिक कठिनता होइतैक तँ एक थारीक अनेक भाग पृथक् - पृथक् किन्तु जोड़लासँ एक होयवाक योग्य बनल छल । एही क्रमक वाटी ओ गिलासो बनल । तथापि एक - एक भागकें लय अयवा-जेवाक हेतु साँगि सभ बनल जाहि सभपर अठ - अठ गोदय लादि आनय लय जाय । परन्तु ओ वासन सभ एना जुटिजाय जे मोर वा दूध एको बुन्द नहि चुवय । ओ सभक आनल एक थारी हमर एक कओर (ग्रास) होइत छल ओ एक वाल्टी पेय एक घोंटे ।

सम्राट् हमर खयवाक क्रमक समाचार सूनि एकदिन कहाय पठओलन्हि जे हमर कलौ खायव ओ देखय चाहैत छथि । हम कहाय पठओलन्हि जे जहिआ खुसी होन्हि आवथि परञ्च अपन बैसवाक कुरसी अवन्हि । एकर दोसरे दिन सम्राट् अंगरक्षक ओ गृहमन्त्रीक संग अयलाह । हम सभकें यथोचित अभिवादन कय अपन खयवाक चौकी पर कुरसी समेत राखि अपन खयवाक तमासा देखाय मनोरञ्जित कयल । परन्तु भविष्यमे हमरा हेतु ई एक प्रकारसँ अनिष्टकारक प्रमाणित भेल । कारण हमर विराट् भोजनक व्यापार देखि प्रकाण्ड अपव्ययक धारणा सम्राट्क मनमे खचित भय गेलन्हि ।

मिथिलाक लोक-नृत्य-परम्परा

श्रीप्रफुल्लकुमारसिंह 'मौन' : श्रीभुवनेश्वरचौधरी

‘साहित्य, कला आओर संस्कृतिक जे रूप अखिल अथवा मौलिक रूपमे एक-मात्र परम्परागत आधारपर विकसित होइत चलि आइल अछि, ओइह लोक-साहित्य, लोक-कला आओर लोक-संस्कृति थीक।

—वृन्दावनविहारीमिश्र

हमरा लोकनिक लोक-संस्कृति कला (लोक-कला, लोक-नृत्य-कला, संगीत आदि) तथा ज्ञानक (लोकगीत, लोकोक्ति, लोक-साहित्य आदि) क्षेत्रमे बहुत आगू बढ़ल अछि, किन्तु सांस्कृतिक अन्हारक युगमे लोक एकरा ग्राम्य-तुच्छता बुझिकेँ अपन लोक-संस्कृतिकेँ बिसरए लागल। जखन राष्ट्रिय चेतना विकसित होमय लागल आओर अपन भरल-पूरल संस्कृतिक प्रति स्नेह जागल तखन गामक अन्हार कोनमे टिमटिमाइत एहि सांस्कृतिक ज्योतिकेँ पुनः दीप्ति करबाक विचार लोकसभमे जागि रहल अछि। एतए स्मरणीय अछि जे भारतक सांस्कृतिक महानतामे गामक सहयोग सभसँ अधिक रहल अछि।

लोक-नृत्य की थीक ?

हमरा लोकनिक लोक-नृत्यहि शास्त्रीय-नृत्यक जननी थीक। जतए शास्त्रीय नृत्य (Classical dance) शास्त्रीय नियम सभसँ बान्हल अछि ओओर जकर भाव-श्रोत क्षेत्रमे बहइत अछि ओतए हमरा लोकनिक लोक-नृत्य हृदयक उन्मुक्त धार तथा भावक स्वच्छन्दता लएकेँ चलइत अछि। जाहि तरहें सुख आओर दुख, हँसब आओर कानब मनुष्यक जन्मजात (आदिम) देन तथा स्वभाविक वृत्ति थीक। ओहि तरहें लोक-नृत्य सेहो एक परम्परागत एवं स्वभाविक वृत्ति थीक, जे प्रत्येक वर्तमान पीढ़ीकेँ अपन पूर्वजसँ संचयक रूपमे भेटैत अछि। जीवनमे आनन्दक घड़ी जखन अबैत अछि, लोकक अंग-प्रत्यंगमे खुशीक लहरि हिलकोरि मारैत प्रसन्नता अछि, तखन लोक अपन आनन्दातिरेकमे सभ किछुकेँ बिसरि नाचि उठैत अछि। लोकनृत्य किछु एहि रूपक होइछ। मिथिलाक गाम सभमे ‘नृत्य’क लोक-भाषी शब्द ‘नौच’ थीक।

लोकनृत्य आओर शास्त्रीयनृत्य (नॉच) (Folk dance and classical dance)

ओहि प्रकारक नृत्य जे शास्त्रीय नियम सभसँ बान्हल अछि, जकर पद-चाप, अंग-संचालन, मुद्रा-अंकन आदि एक विशेष विधान (नियम) द्वारा संयमित होइत अछि, ओकरा शास्त्रीय नृत्य कहल जाइत छैक । किन्तु लोक-नृत्य (नॉच) एहूँ प्राचीन अछि । लोक-नृत्य आदिए कालसँ चलि आवि रहल ओ नृत्य-पद्धति थीक जे आगू चलिकेँ सुसंस्कृत भए शास्त्रीय नृत्य भए गेल । एहि प्रकारेँ लोक-नृत्य शास्त्रीय-नृत्यक जन्मदातृ अछि । लोक-नृत्य-शैली (पद्धति) थीक जाहिमे प्रकृतिक नैसर्गिकता तथा कृत्रिमतासँ दूर लोक-भावनाक स्वभाविकता निहित अछि आओर लोक-जीवनक स्पन्दन प्रत्येक लय एवं तालपर फूटि पड़ैत अछि । जतै धरि दुनूक पारस्परिक सम्बन्धक प्रश्न उठैत अछि, शास्त्रीय नृत्य लोकनृत्यहिक सुसंस्कृत रूप थीक । अन्तमे एहि-ठाम ई कहि देब आवश्यक अछि जे शास्त्रीय नृत्य जे कि नियमक बन्धनमे आवद्ध अछि आओर जकर भावक धार एक संकुचित क्षेत्र भएकेँ बहैत अछि ओतए हमरा लोकनिक लोकनृत्य हृदयक उन्मुक्त धार तथा भावक स्वच्छन्दता लएकेँ चलैत अछि । जाहि तरहें सुख आर दुःख लोककेँ भेटल एक परम्परागत देन तथा लोक-जीवनक एक स्वभाविक एवं सांस्कृतिक चेतना थीक ओहि तरहें लोक-नृत्य सेहो एक परम्परागत (आदिम) तथा स्वभाविक वृत्ति थीक जे प्रत्येककेँ अपन पूर्वजसँ संस्कारक रूपमे प्राप्त होएत आएल अछि ।

लोक-नृत्य अधिक काल रातिएहिमे होइत अछि । शुक्ल पक्षक चन्द्र-ज्योत्स्नानामे (इजोरियामे) अथवा कृष्ण-पक्षक अन्हरियामे मसाल लेसिकेँ पुरुष एवं स्त्रीगणक लोकनृत्य भिन्न-भिन्न होइत अछि किन्तु ई परम्परा मुसलमानी शासनकालसँ प्रारंभ भेल । नहि त एहिसँ पहिने पुरुष एवं स्त्रीगणक लोकनृत्य एकहि ठाम सम्मिलित रूपसँ होइत छल । दक्षिण विहारक आदिवासी लोक-नृत्य आइयो-काल्हि संगहि संग होइत अछि जे यदा कदा पावनि-तिहारक समयमे दिन-राति होइत रहैत अछि ।

लोकनृत्य एवं लोकगीत (Folk dance and Folk lore)

मिथिलाक संस्कृतिमे लोकनृत्यक एवं लोकगीतक अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान अछि । लोकगीतहिक भौति लोकनृत्यमे सेहो एहि ठामक संस्कृतिक अन्तरात्मा

बाजिरहल अछि तथा ग्रामीण लोक-जीवनक दृश्य प्रतिबिम्बित होइत अछि । एहि नृत्य सभक कथानक एहि ठामक अनुपम नैसर्गिक सुन्दरता आओर प्रेम-मय उल्लास तथा एहिठामक जीवनमे परिब्याप्त व्यापक दरिद्रता पर आधारित होएवाक कारणेँ विशेष मर्मस्पर्शी, भावपूर्ण एवं आकर्षक सेहो होइत अछि । जतै धरि चिरस्थायी दरिद्रता एवं कोशीक भयंकरता एहिठामक निवासीकेँ जीवनक अनेक दुखपूर्ण वस्तु ओकरामे नृत्य एवं संगीतक प्रति प्रेम जगाएकेँ ओकर अभावक आंशिक पूर्ति कए देलक अछि । तेँ हेतु एहिठामक लोक सभ हँसितो अछि आओर ओएह हँसी नैसर्गिक थीक तथा अनेको प्रकारक समस्या पर विजयक गौरव चिह्न । एहि ठामक लोक-जीवनक परिश्रमशीलता तथा नीरसताकेँ नृत्य एवं गीत द्वारा भंग करइत अछि । जीवनमे उल्लासक पहर अबैत अछि । लोक खुशीस मयूरक भाँति नाचि उठैत अछि आओर चिड़ै जकाँ गाबि उठैत अछि । ओतहि गीतमय लोक-नृत्यक सृष्टि होमय लागैत अछि जे कहियो-कहियो राति-राति भरि चलिते रहैत अछि । आनन्दक घड़ीमे राति फूजल आँखिमे कखन गीत स्पष्ट कए देब उचित थीक जे कतेक लोकनृत्य लोक-गीतक आधार पाबि प्रदर्शन होएत अछि ।

लोक-नृत्यक परम्परा

बिहारमे लोक-नृत्यक क्रम आदि कालहिसँ चलि आबि रहल अछि । समय-समय पर एहिमे विकासक नामपर सुधार सेहो आनल गेल अछि । एहि प्रकार कोनो लोक-नृत्य आइ पूर्णतः अपन मौलिक रूपमे नहि अछि । जौँ जौँ मनुष्य सभ्य होइत गेल हुनकर लोकनृत्य सेहो सुसंस्कृत होइत गेल तथापि आइ लोक-नृत्य सभ तथा शास्त्रीय-नृत्य सभ मे कोनो समता नहि अछि । आइ मिथिला, मगध अथवा आदिवासी क्षेत्र सभक 'लोक-नृत्य-परम्परा' अध्ययनक विषय बनि गेल अछि । वैदिक काल धरि लोकनृत्यक स्वरूप सुधरि चुकल छल । मिथिलाक महान मुनि यागवल्क्य कहने छथि जे पापसँ मुक्ति लेल ईश्वरक आराधना गीत आओर नृत्यहुँ द्वारा कएल जा सकैत अछि । एहि हेतु संगीत आओर नृत्यक महत्व मिथिलाक लोक-जीवनमे (ओहि) युगसँ चलि आबि रहल अछि । किन्तु लोक-जीवनमे हमरा लोकनिकेँ जे लोक-नृत्य देखबामे अबैत अछि ओ सभ संगीतसँ परिपूर्ण अछि ।

ई मिथिलाक आँगन थीक जकर प्रत्येक क्षेत्रमे सन्निहित संगीत नृत्य अछि । एहि ठाम शताधिक प्रकारक लोक-नृत्य (नाँच) पाओल जाइत अछि । मिथिलाक लोक-नृत्य सभक ई विशेषता अछि जे एहि ठामक लोक-नृत्य सभमे राग-तत्त्व भरल रहइत अछि अर्थात् प्रत्येक नृत्यक संग ओकरासँ सम्बन्धित लोक-गीत सेहो गाओल जाइत अछि । जेना नारदी नाँच, भगता नाँच, राम-लीला-नाँच, किरतनियाँ नाँच, ब्रजवासी नाँच, विदापत नाँच, पूजा-आरती नाँच आदि लोक-नृत्य अध्यात्मिकताकेँ, रास नाँच, सामोँ चकेवा, जटा-जटिन, आदि लोक-नृत्य क्रमशः प्रेम तथा लोक जीवनक जटिलताकेँ एवं करिया मूमरि-नाँच (नेना-भुटकाक नाँच) पमरिया-नाँच, वक्खो-नाच (वधैया माँगव-जन्मादि शुभ अवसर पर सोहर-गीत आदि), मिमिआ-नाँच (छी-गणक) कठपुतरी-नाँच (मनोविनोदक प्राचीन साधन), चमर नटुआ नाँच (उत्सव पर—चमारक लोक-नृत्य), कमला-माय-नाँच एवं महराइ नाँच मल्लाहक लोक-नृत्य) आदि जीवनक उल्लासकेँ व्यक्त करइत अछि । एहि प्रकारेँ हमरा लोकनिक लोक नृत्य धर्म, प्रेम आओर आनन्दसँ सम्बन्धित अछि । लोक-नृत्य आइ बड़ कम देखवामे अबइए अछि आओर ओही पिछड़ल क्षेत्र एवं जाति (Blackward area and community) सभमे सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक जीवनमे मुसलमान तथा अंग्रेजक आक्रमणक द्वारा हस्तक्षेप नहि कएल गेल अछि । लोक नृत्य ओ धरोहर तथा लोक-संस्कृतिक कलात्मक प्रतीक अछि जकरा परम्पराक रूपमे आइयो धरि प्रत्येक पीढ़ी कायम रखने आएल अछि । प्रत्येक क्षेत्रमे लोकनृत्य सभक अपन भिन्न-भिन्न विशेषता होइत छैक ।

मिथिलाक लोक-नृत्य सभमे कोनो विशेष प्रकारक वेश-भूषाक आवश्यकता नहि होइत अछि । मात्र पमरिया नाँच तथा नटुआ नाचमे एक विशेष प्रकारक वेशभूषाक आवश्यकता होइत अछि । जेना पमरिया-नाँचक हेतु घघरा, अचकन एवं मुलतानी पगड़ी व्यवहारमे आनल जाइत अछि । नटुआ नाचक वेश-भूषा त दिनो दिन बढइलते जा रहल अछि । अन्य प्रकारक लोक-नृत्य सभमे साधारण वेश-भूषाहिसँ काज चलि जाइछ । आदिवासी सभक लोक-नृत्यमे आकर्षक वस्त्र पहिरल जाइत अछि पंजाबक मोगड़ा नृत्य मणिपुरक मणिपुरी नृत्य आदि मूलतः जातीय लोक-नृत्य अछि । आइ भनहिँ ओकरा शास्त्रीय रूप कियाक नहि देल जाए ?

मिथिला मे सेहो कथक नृत्यक प्राचीन लोक रूप यदा कदा देखबामे भेटि जाइत अछि । एतए किरतनियाँ-नाँचहिक समान कथक नाँच (कथाक व्याख्या कएनिहार कथाकार) बड़ प्राचीन अछि जे कहियो सारंगी, इसराज, तबला, मजीरा आदिक लय पर नाचल जाइत छल । मिथिलाक वर्तमान छकरवाजी-नाँचक मौलिकता नीक जकां नष्टप्राय अछि आओर ओकरा सिनेमाक आधुनिक नृत्य सभ विशेष रूपसँ अपना रंगमे रंगने जाइत अछि । आव ई नाँच व्यवसाय रूप (professional) धारण कए लेलक अछि । एतए ई ध्यानमे देबा योग्य गप्प अछि जे हमरा लोकनिक लोक-नृत्य जखन धरि व्यवसायकेँ स्वीकार नहि कएने छल तखन धरि ओकर मौलिकता तथा स्वतंत्रता नष्ट नहि भेल छल । नेपालक तराइ तथा पहाड़ी सभमे बहुते लोक-नृत्य आइयो काल्हि देखबा मे अबैत अछि जाहिमे मिथिया नाँच, थारू नाँच आदि प्रमुख अछि ।

लोक-नृत्यक परिचय एवं वर्गीकरण (Identification and classification of folk dance)

लोक-नृत्य प्रायः लोक-वाद्य-यंत्र सभक आधारहिपर नियंत्रित एवं प्रदर्शित होइत अछि । कहियो-कहियो लोक-नृत्य विना बाजाकेँ सेहो सम्पन्न कएल जाइत अछि । हृदयक भावना सभकेँ फोलिकेँ लोक-वाद्य-यंत्र सभक (ढोल-पिपही, वाँसुरी, ढम्फ, भाँझ, मजीरा, मृदंग, सरंगी, इसराज, खजुरी, तबला, सितार, चान खोल, हरमुनियाँ, ढाक, खुरदक, पखावज, ढंका, तासा आदि) धुन पर होएबला लोक-नृत्य आइयो हमरा लोकनिक ग्रामीण जीवन केँ मुखरित कए रहल अछि । गाम सभमे साओन अबैत अछि त मूलाक बहार आवि जाइत अछि आओर मन मयूर प्रफुल्लित भए नाचि उठैत अछि मिथिलाक ग्रामीण क्षेत्रमे होएबला लोक-नृत्य सभक परिचय एवं वर्गीकरण एहि प्रकारक अछि :

(१) आध्यात्मिक लोक-नृत्य किछु लोक-नृत्य एहि रूपक होइत अछि जाहिमे देवी-देवताक उपासना लोक-नृत्य एवं लोक गीतक आधारपर कएल जाइत अछि । जाहिमे बाजाक ताल एवं स्वर पर नचनियाँ मूक भएकेँ नाचैत अछि । एहि प्रकारक लोक-नृत्यमे बाजाक कमसँ कम प्रयोग कएल जाइत अछि । यथा भगता नाँच, जे मिथिलाक सभसँ प्राचीन लोक-नृत्य मानल जाइत अछि एहि हेतु भगता नाँच केँ आदि-लोक-नृत्य सेहो कहल जाइत अछि । भगता

नौचमे 'भगत' (भक्त, जकरा देहमे कथित देवी-देवताक प्रवेश होइत अछि) संग-संग बाजा बजनिहार (ढोल आ पिपही) सेहो भूमि-भूमि केँ नाचैत अछि । ओतए ई पता लगाएब कठिन भए जाइत अछि जे बाजाक धुन पर भगत नाचैत छथि अथवा कि भगतक पद-चाप वा अंग-संचालन पर बाजा बजैत अछि । एहि प्रकारक लोक-नृत्य मे कमला मैया नाच, सलहेस नौच, डीहवार नौच, किरतनियो नौच, पूजा नौच आदि अवैत अछि ।

किछु प्रकारक लोक-नृत्य एहि तरहक होइत अछि जाहिमे भगवानक गुणगान कएल जाइत अछि । यथा राम-लीला, कृष्ण-लीला, कुंजवासी नौच, नारदी-नौच, सती-विहुला-नौच आदि ।

(२) सामूहिक लोक नृत्य—(क) किछु लोक-नृत्य एकसँ अधिक व्यक्तिक द्वारा सम्पन्न कएल जाइत अछि त किछु लोक-नृत्य मात्र स्त्रीगणक द्वारा कएल जाइत अछि जे बाजाक संग अथवा बिना बाजहुकेँ होइत अछि । स्त्रीगणक लोक-नृत्यमे मिथिलामे पुरुष भाग नहि लए सकैत छथि । हमरा लोकनिक आदि लोक-नृत्य पुरुष आओर स्त्रीक द्वारा सम्मिलित रूपेँ होइत छल किन्तु हमरा लोकनिक सामाजिक जीवनमे बाहरी हस्तक्षेपक कारणेँ ई प्रथा प्रायः छटि गेल आओर पुरुष एवं स्त्रीगणक लोक-नृत्य एक दोसरासँ फरक भए गेल । स्त्री लोकनिक द्वारा होएबला लोक नृत्यमे भिभिया नौच, जटा-जटिन नौच, सामौ-चकेवा नाच आदि एखनहुँ होइत अछि । (ख) नेना भुटकाक सेहो एक भिन्ने प्रकारक लोक-नृत्य मिथिलाक आंगन सभमे देखबामे अवैत अछि जाहि नृत्यमे निश्छल प्रेमक भावना भरल रहैत अछि । जेना करिया भुम्मरि नौच—एहि नाचमे किशोर आ किशोरी लोकनि हत्था-वाही कए गोल-मोल भए खूब भूमि-भूमि केँ नाचैत छथि । यदा कदा बच्चा सभ जोड़ी-जोड़ी भए एक दोसराक हाथ पकड़ि करिया-भुम्मरि खेलै छी.....गवैत जाइत ओ नचैत छथि । कतहु-कतहु एहि नृत्यमे करिया (कालो माय) क संग योगिनीक भूमि-भूमि 'भुम्मर' नाच कएल जाइत अछि ।

(ग) पुरुष लोकनिक सामूहिक लोकनृत्य—अलगे होइत अछि, जे बाजाक ताल एवं गीत स्वर पर आधारित रहैत अछि । एहि प्रकारक लोकनृत्य मे बजनिहो (बाजा बजनिहार) सेहो संग-संग नाच करैत अछि । एहि प्रकारक सामूहिक लोक-नृत्य सभमे नारदी नाच, चमर नहुआ नौच, महरई नौच, आदि अवैत अछि ।

(३) स्त्री-पुरुषक सम्मिलित नाँच किछु लोक-नृत्य एहनो होइत अछि जे पुरुष आओर स्त्रीगणक द्वारा सम्मिलित रूपसँ कएल जाइत अछि । मिथिलामे ई प्रथा आव धोरे धोरे लुप्त-प्राय भेल जाइत अछि किन्तु बिहारक उत्तर-वासी बिहारक सौतारी-नाच तथा दक्षिण बिहारक आदिवासी-नाँच सम आइयो-काल्हि सम्मिलित रूपसँ कएल जाइत अछि । एकरा लोकनिक नाचमे मद्य-पान सेहो खूब होइत अछि । मिथिलाक एहि प्रकारक लोकनृत्य त भेटैत अछि किन्तु ओ मिथिलाक अपन वस्तु (Non-Mithila origin) नहि थीक जेना (क) रास-नृत्य एहि नाचक अन्तर्गत ब्रजवासी-नाच, दान-लीला, वंशी-लीला, कदम-लीला, नाग-लीला, दही-लीला-नाँच आदि सम्मिलित अछि । ई लोक-नृत्य शैली ब्रज-भूमिक देन थीक जे कहियो ब्रजभूमिस आसाम धरि पसरल छल ।

(ख) बक्खो-नाँच ई नाच सेहो मिथिलाक मौलिक लोकनृत्य नहि थीक । ईहा मुसलमानी सभ्यताक देन थीक बक्खो नाचमे बक्खो-बक्खोनी पति-पत्नीक दूनु संग-संग नाचैत अछि । जखन कोनो परिवारमे जन्मादि शुभावसर अवसर अछि ताहि समयमे ई हुनका आतए नाँच गान कए बधैया बधाइ माँगैत अछि । एहि अवसर पर ओ सोहर बधैया आदि नाना प्रकारक सरस गीत नाँचि-नाँचि केँ गबैत अछि ।

(४) जातीय लोकनृत्य—किछु प्रकारक लोकनृत्य जाति विशेषक अपन मौलिक लोकनृत्य शैली अछि जे ओकरा लोकनिक धार्मिक विश्वास एवं परम्पराक आधार पर बनल अछि । उदाहरणस्वरूप :

(क) कमला-माइक-नाँच—मलाहक पूज्य देवी कमला-कोइल मानल जाइत अछि । ओ लोकनि माछ मारवाक पहिने, मखान बहराएक पहिने, कोनो पांखरि वा इनार खुनैलाक बाद तथा माछ मारवाक सफलता प्राप्ति भेलापर एवं आदि अनेको शुभ अवसर पर इष्ट-देवी कमलाक नाच-गान द्वारा करैत छथि । एहि नृत्य संग विशेषतः ढोल आ पिपही बजाओल जाइत अछि । ठीक एही प्रकारक लोकनृत्य बम्बईक समुद्र कातक मलाह लोकनि सेहो करैत छथि किन्तु दूनूक शैलीमे अन्तर अछि । कतहु-कतहु ई लोकनि कमला-माइक नाँचक समान महाराइ-नाँच करैत छथि ।

(ख) चमार नटुआ नाँच—एहि नाँचमे मुख्यतः चमारे लोकनि भाग लैत छथि किन्तु छोट जातिक लोककेँ मनोरंजन एहि नाँच द्वारा होइत अछि । ओ लोकनि एहि चमार नटुआ नाँचकेँ बिआह आदि अवसर पर अपना ओहि ठाम नचवैत छथि । ई नाँच चलितो-फिरितो होइत अछि । एहिमे एकगोट बालक नर्तकीक वेशमे गहना-गुरियासँ अनाहँ सुसज्जित कए नचैत गवैत चलैत अछि । ओकरा संगमे खुरदक पिपही-मजीरा आदि वज्रैत चलैत रहैत अछि ।

डम्फा-बसुली नाँच इहो नाँच मुख्यतः चमारक नाँच थीक किन्तु निम्न-वर्गीय लोकनि सभ एकरा अपनाए लेलन्हि अछि । एहि लोक-नृत्यमे चमार-नटुआ नाँच जकाँ बालक नर्तकी बनि डम्फा आ बाँजुरीक स्वरपर नचैत अछि । एहि नृत्यकेँ छोट जाति सभ बड़ पसन्द करैत अछि ।

(ग) सलहेस नाँच—ई लोकनृत्य मुसहड़ द्वारा अपन इष्टदेवता उपासनाक अवसरपर कएल जाइत अछि । ई नृत्य नेपालक तराइमे लोक जकाँ कएल जाइत अछि । ई लोक-नृत्य नेपालक पहाड़ो लोकनिक मौलिक लोक-नृत्य थीक किन्तु छोट जातिक लोक सभ नेपालसँ आनि अपन लोक जीवनमे अपनौलन्हि ।

(घ) झरनी नाँच—ई मुसलमानक लोक-नृत्य थीक जे मुहर्रमक अवसरपर कएल जाइत अछि । ई नाँच वृत्ताकार घेरामे पुरुषक द्वारा झरनी (बाँसक बनावोल गेल) पर मुहर्रम दिन विशेष आयोजनक संग कएल जाइत अछि । मुसलमान एहि झरनी नाँचमे हिन्दु लोकनि सेहो सहयोग दैत छथि । एकर अतिरिक्त आओरो अनेक प्रकारक लोकनृत्य अछि जे पूर्णतः जातीय लोकनृत्य थीक ।

(५) अन्य प्रकारक लोकनृत्य—उपर्युक्त लोकनृत्य सभक परिचयक बादहुँ बहुतरास लोकनृत्य बाँचि जाइत अछि । यथा

(क) विद्यापति-नाँच मिथिलाक राजा शिवसिंह अपना समयमे विद्यापतिक गीत सभक आधार पर शास्त्रीय-नृत्यक स्थापना कएलन्हि किन्तु शिवसिंहक परोक्ष भेलापर विद्यापति-नृत्य अपन शास्त्रीय आवरण धीरे-धीरे छाड़ए लागल आओर विद्यापति-नृत्य राजभवनसँ जनसाधारणमे 'विद्यापति नाँचक' रूपमे व्याप्त होमए लागल । विद्यापति नाँच (मुख्यतः) पूर्णिया जिला तथा मिथिलाक आनो भागमे आइयो-काल्हि पाओल जाइछ ।

(४) विदेशिया नाँच—मिथिलामे किछु दिन पूर्वसँ भिखारीदास द्वारा चलाओल एक विशेष प्रकारक लोकनृत्य एवं लोकनाट्य-परम्परा संगठित रूपेँ चलि आबि रहल अछि, जकर भाषा तथा भावना लोक-जीवन हर्ष आओर विषाद, संयोग आओर वियोग, सुख एवं दुख आदिकेँ स्पर्श करैत चलि आबि रहल अछि ।

(ग) छकुरबाजी नाँच—ई नाँच नटुआ-नाँचक सदृशहि होइत अछि । किन्तु छकुरबाजी नाँच अपन, परम्परागत मौलिकता छोड़ि सिनेमाक नाँचसँ दिनानु-दिन प्रभावित भेल जाए रहल अछि । ई नाँच देहातमे उत्सव आदि शुभ-अवसर पर आकर्षण एवं मनोरंजनक साधन मानल जाइत अछि । ई नाँच मिथिलाक सभ्यो समाज द्वारा अपनाओल अछि ।

उपर्युक्त लोकनृत्यक बादहुँ पमरिया नाँच, नटुआ नाँच, हिजरा नाँच, मन-चुबट्टो नाँच, गरथैया नाँच, कठगुतरी नाँच, वेश्या नाँच, सती विहुला-नाँच, भिरहा आदि लोकनृत्यहुँ मिथिलामे प्रसिद्ध अछि ।

लोकनृत्यक लोप होएबाक कारण

जतेक प्रकारक लोकनृत्य सभक वर्णन उपर कएल गेल अछि ओकरासेँ बहुत कमे लोकनृत्य आइ देखबामे अबैत अछि आओर ओहो लोकनृत्य सभ शनैः शनैः लुप्त प्राय भेल जाइत अछि । गाममे अर्थात् लोक-जीवनमे जौँ जौँ सभ्यताक प्रसाद भेल जाइत अछि लोकनृत्य भेटल जाइत अछि । लोकनृत्य सभक अवशेषहुँ जे आइ देखबामे अबैत अछि से अशिक्षित समाजक बीचमे । जतए आइयो परम्परागत सभ्यता एवं सांस्कृतिक आराधना होइछ आइ लोकनृत्य सभक क्षेत्र ओही बिछड़ल गामहि धरि सीमित भए गेल अछि । दोसर कारण ई अछि जे लोक-जीवनमे विशिष्ट प्रकारक नृत्यसभक (वेश्या - नाँच, सिने-नृत्य आदि) सुलभता भए गेल अछि । तेसर कारण ई अछि जे लोक सभक आर्थिक हालत दिनानुदिन खरापे भेल जाए रहल अछि तखन की गौताह आओर कोना नचताह, हुनका लोकनिक त रीढ़क हड्डी तोड़ि देल गेल अछि । मिथिलाक परम्परागत सांस्कृतिक लोकनृत्यक संरक्षण आवश्यक अछि नहि त ओ दिन दूर नहि जखन बचलो-खुचल लोकनृत्य आँखिसँ दूर भए जाइत ।

लोकनृत्यक क्षेत्रमे नव जागरण

आइ-काल्हि जखन सांस्कृतिक चेतनाक युग आएल अछि तखन हमरा लोकनि पुनः एक बेर पुरान संस्कृतिकेँ फेरसँ पुनर्जीवित करवाक चेष्टामे लागि पड़लहुँ अछि । ई त शुभ लक्षणहि कहल जाएत ! भारत सरकार गणतंत्र दिवसक शुभ-अवसर पर भारतक विभिन्न क्षेत्रसँ लोक-कलाकार सभकेँ (लोक-नर्तक-नर्तकी) मंगाएकेँ हुनका लोकनिक लोकनृत्य सभक प्रदर्शनक प्रत्येक वर्ष आयोजन करैत अछि । एतबहि नहि, स्कूल आओर कॉलेजक छात्र लोकनि सेहो लोकनृत्य प्रदर्शन अग्न विद्यालयक रंगमंच पर करवाक चेष्टा करए लगलाह अछि त एहि प्रकारेँ जन-साधारणक ध्यमे लोकनृत्यक प्रति रुचि दिनानुदिन बढाओल जाइछ ओ लोकनि एहिस लोकनृत्यसँ प्रेरणा प्राप्त कए सकथि ।

एतबहि नहि, लोकनृत्यक क्षेत्रमे एक नव कान्ति सेहो आवि गेल अछि जे लोक-जीवनक आधार पर नव-नव लोक नृत्यक सृजन भए रहल अछि । जेना भंगघोटना नृत्य, किसानक अन्न-पानि नृत्य (रोपनी, कटनी, ओसै नो आदि)-चरखा एवं जांत-नृत्य आदि । दक्षिण भारतमे सेहो रोपवाक नृत्य, तथा नीक अन्न-पानि भेलाक उपलक्ष्यमे लोकनृत्यक धूम मांच जाइत अछि । ई थीक हमरा लोकनिक लोक-जीवनक आनन्दमय घड़ोक ओ अविस्मरणीय क्षण जतए जीवन सादखन खिलबिलाइत रहैत अछि ।

जे किछु हो ई सभकेँ कहए पड़त जे मिथिलाक लोकनृत्यमे ओ ममस्पर्शिनी शक्ति अछि जे शोचहिँ लोककेँ अपना दिशि आकर्षित कए लैत अछि :

धन्य मिथिलाक ई ओगन
जतए मोरसन लोक नचै छथि,
आओर कोकिल 'सन गान ।
कतेक युगक संस्कृति समेटल
मिथिला देश महान ॥' 'मौन'
जय मिथिले !